

शिव



आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

15



वर्ष 06 अंक 11 हिन्दी (मासिक) नवंबर 2018 सिरोंही पृष्ठ 16 मूल्य 9.50

07



अपने अंदर के रावण को जलाएं और देवी...

14



'विश्व शांति सरोवर' समाजसेवा में समर्पित

वैश्विक शिखर सम्मेलन...

आध्यात्म का विज्ञान जानने से सुमन बनेगा पर्यावरण

भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह, सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा, केंद्रीय मंत्री धावरचंद गहलोत, अमेरिका से टीवी एक्ट्रेस मारला मैपल, समाजसेवी पद्मश्री डॉ. प्रकाश आमटे, पर्यावरणविद् डॉ. वंदना शिवा सहित कई नामी हस्तियों ने की शिरकत



वैश्विक शिखर सम्मेलन

विज्ञान, अध्यात्म और पर्यावरण

आध्यात्म विज्ञान पर्यावरण
वैश्विक शिखर सम्मेलन...

समापन पर सभी को दिलाया संकल्प-सुखमय संसार के नवनिर्माण के लिए अपने मन को युद्धस्थल नहीं योगस्थल बनाना होगा

सभी विद्वानों ने एक स्वर में कहा- सबसे पहले मानसिक प्रदूषण मिटाना होगा, आध्यात्म में छुपा है सारी समस्याओं का समाधान

पर्यावरणविदों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण आबू रोड। आध्यात्मिक शक्ति दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है। आध्यात्म का विज्ञान जानने से ही मन का पर्यावरण सुखमय बनेगा। स्व

परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है। यदि हम आध्यात्मिक व वैचारिक रूप से सशक्त, संपन्न और शक्तिशाली होंगे तो हमारे द्वारा किए गए सभी कर्म प्रकृति और मानव के हित में होंगे। विज्ञान का भी सुख-शांतिमय जीवन में सदुपयोग कर सकेंगे। इसके लिए हम सभी को पूरे विश्व से मानसिक प्रदूषण (भेदभाव, ईर्ष्या, नफरत, हिंसा) को दूर करना होगा। अपने मन-सोच को बड़ा करना होगा। ये आध्यात्म से ही संभव है। यही विश्व शांति का आधार है।

यह निष्कर्ष वैश्विक शिखर सम्मेलन में विश्व के 140 देशों से पधारे आध्यात्म, विज्ञान और पर्यावरण से जुड़े विद्वानों ने चार दिन मंथन कर निकाला। ब्रह्माकुमारी संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड शांतिवन परिसर में 29 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सम्मेलन

आयोजित किया गया। इसमें विश्वभर से वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस-आईपीएस, राजनीतिज्ञ, धर्मगुरु, पर्यावरणविद्, समाजसेवी, सामाजिक कार्यकर्ता और मीडिया जगत की जानी-मानी हस्तियों ने शिरकत की। सभी ने चार दिन मंथन पर एक स्वर में कहा जब हमारी अंतर्चेतना जागृत होगी तो विचार और कर्म सकारात्मक व श्रेष्ठ होंगे। आध्यात्म हमें सही मायनों में

आध्यात्म, विज्ञान और पर्यावरण पर विश्व के 140 देशों से पधारे विद्वानों ने चार दिन किया मंथन

जीवन जीने की कला सिखाता है। इसमें दुनिया की सभी समस्याओं का समाधान समाया है। जब एक-एक व्यक्ति में सकारात्मक बदलाव होता तो यही दुनिया स्वर्णिम युग बन जाएगी। भारत की प्राचीन संस्कृति योग-आध्यात्म है जिसे जानने और समझने के लिए पूरी दुनिया से लोग भारत आते हैं। हमारी संस्कृति बताती है कि आध्यात्म और विज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं न कि विरोधी। पर्यावरणविदों का शॉल, माला और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया। वहीं साइंस और स्त्रीचुआलिटी का आपस में परस्पर संबंध बताने के लिए एक्सपो लगाई गई, जिसमें साइंस के मॉडल से जीवन में स्त्रीचुआलिटी का महत्व बताया गया। संस्थान के 82 वर्ष के सफर को बताते आने वाली स्वर्णिम दुनिया की झलक दिखाई गई। ..विस्तृत पेज 2 व 3 पर

स्वच्छ भारत मिशन के शुभारंभ पर बोले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी...

ब्रह्माकुमारी का स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का मार्ग स्वच्छता के स्थायी संस्कार विकसित कर रहा



शिव आमंत्रण आबू रोड। स्वच्छ भारत अभियान के दूसरे चरण का 15 सितंबर को शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एंबेसेडर राजयोगिनी दादी जानकी से बात की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा मैं ब्रह्माकुमारी संस्थान का स्वच्छता अभियान से जुड़ने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। संस्थान ने भारत की प्रतिष्ठा को दुनियाभर में पुनः प्रतिस्थापित करने का काम किया है। देश में स्वच्छता का आज ये कार्य हर एक के पुरुषार्थ से संभव हो पा रहा है। आपने अगले 15 दिन में 50 से अधिक स्थानों को स्वच्छ करने को जो लक्ष्य रखा है वह बहुत ही काबिले तारीफ है। पीएम मोदी ने कहा मैंने संस्थान के 80वें वार्षिक उत्सव में संस्था से ऊर्जा संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, कुपोषण आदि के साथ जुड़ने का आह्वान किया था। मुझे खुशी है कि संस्थान ने न केवल इसे याद रखा बल्कि अपनी 10 सूत्रीय कार्ययोजना बनाकर देशभर में काम भी शुरू कर दिया। संस्थान हमेशा से समाज से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए अपनी भूमिका निभाता रहा है। स्वच्छता के प्रति जन-जागरण में भी ब्रह्माकुमारी हमेशा से आगे रहा है। संस्थान ही नहीं आदरणीया दादी जानकीजी खुद भी ब्रांड एंबेसेडर के रूप में इस अभियान को गति देने में निरंतर अपनी भूमिका निभा रही हैं। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का जो आपका मार्ग है वह देश में स्वच्छता के स्थायी संस्कार विकसित करने में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। बता दें कि संस्थान ने 15 सितंबर से 2 अक्टूबर के बीच देशभर के सेवाकेंद्रों के माध्यम से रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, मुख्य सड़कों आदि स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाया। इसमें ब्रह्माकुमारी बहनों सहित लाखों भाई-बहनों ने उत्साह के साथ भाग लिया। (विस्तृत पेज 8-9 पर)

उद्घाटन सत्र...

ब्रह्माकुमारी में दी जाती है बड़ा मन करने की शिक्षा

गृहमंत्री ने वैश्विक शिखर सम्मेलन में मन, आध्यात्म और विज्ञान पर रखे विचार....

शिव आमंत्रण आबू रोड। ब्रह्माकुमारी के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने मन, आध्यात्म, विज्ञान और भारतीय संस्कृति पर बात की। उन्होंने कहा जीवन में बड़ा काम करने के लिए बड़ा मन होना जरूरी है। छोटे मन का व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता है। जितना बड़ा आपका मन होगा उतना ही जीवन में आनंद की मात्रा बढ़ती चली जाएगी। केवल प्रार्थना करने से व्यक्ति आध्यात्मिक नहीं होता है। जितना वह बड़ा करता चला जाता है उतना

जीवन में आध्यात्मिक ऊंचाइयों को छूता जाता है। पूजा-अर्चना और इबादत करने के साथ मन बड़ा करने की जरूरत है। जिसका मन जितना बड़ा होगा वह उतना ही आध्यात्मिक होगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान में बड़ा मन करने की शिक्षा दी जाती है। संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी और दादी रतनमोहिनी जी का कितना बड़ा दिल होगा जो इतने बड़े परिवार को संभाल कर रखा है। साथ ही इतनी बहनों को साथ लेकर विश्व के 146 देशों में खड़ा कर दिया।

जो सरकार नहीं कर सकती वो ब्रह्माकुमारी कर रही: गृहमंत्री ने कहा संयुक्त राष्ट्र संघ ने छोटी-छोटी बातों पर चिंता जाहिर की है। स्वच्छता, जैविक खेती, सौर ऊर्जा, महिला सशक्तिकरण आदि पर संस्था कार्य कर रही है। जो

काम सरकार नहीं कर सकती वो ब्रह्माकुमारी संस्था कर रही है। संस्था केवल मानव ही नहीं मानवीयता, जीव-जंतुओं की भी चिंता कर रही है। 80वें वार्षिकोत्सव पर संस्था ने 80 लाख पौधारोपण कर पर्यावरण बचाने का संदेश दिया। हमारे देश के ऋषि-मुनियों ने ही शून्य का आविष्कार और आध्यात्म की खोज की। विज्ञान, आध्यात्म ये एक-दूसरे के विपरीत हैं ये अवधारणा विदेशों की है। भारत की अवधारणा है विज्ञान-आध्यात्म दोनों एक-दूसरे के पूरक और एक हैं। चरक, आरोहक, आर्य भट्ट ऋषि जितने बड़े ऋषि थे उतने ही बड़े साइंटिस्ट भी थे।

BRAHMAKUMARIS

आध्यात्म से ही संभव है 'पर्यावरण संरक्षण'



आध्यात्म | विज्ञान | पर्यावरण

वैश्विक शिखर सम्मेलन...

जहर की खेती से 75 फीसदी जीव मर चुके: डॉ. वंदना शिवा

प्रसिद्ध पर्यावरण संरक्षण कार्यकर्ता एवं नवधान्या फाउंडेशन की संस्थापक डॉ. वंदना शिवा ने कहा भारत में 20 साल में तीन लाख किसानों ने आत्महत्या की है। पर्यावरण के 75 प्रतिशत जीव खत्म हो चुके हैं। हम खेती पोषण के लिए नहीं कर रहे हैं यही कारण है आज 50 फीसदी बच्चे कुपोषण से ग्रस्त हैं। इन सभी समस्याओं का एक ही कारण है जहरयुक्त (रासायनिक खेती)। आज पंजाब की इस हालत के जिम्मेदार खेती में हिंसा के दुष्परिणाम हैं। जिसे हरित क्रांति का नाम दिया वह न हरी है, न क्रांति है। वह स्वर्णिम युग नहीं लाई वह एक अंधकारमय दुनिया लाई। आज पंजाब के 75 फीसदी युवा नशे की गिरफ्त में हैं। राजयोग से ही हम वसुधैव कुटुम्बकम बना सकते हैं। राजयोग सिखाता है जैसा बीज डालेंगे, वैसा उगेगा। हिंसा का बीज डालेंगे तो वही उगेगा। शांति, प्रेम, आनंद, अहिंसा का बीज डालेंगे तो वही उगेगा। स्वर्णिम दुनिया बनाने के लिए जहरमुक्त खेती बनाना होगी, आध्यात्म से जुड़ना होगा।

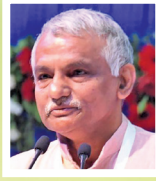
ब्रह्माकुमारीज के इस संदेश को सभी तक पहुंचाने की जरूरत

यहां आकर पॉजिटिव और स्प्रिचुआलिटी के बाइब्रेशन महसूस किए। यहां जाना कि कैसे हम आत्मा को आत्मा से जोड़ सकते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था फ्रीलड में कार्य कर रही है। मुझे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के साथ कार्य करने का मौका मिला। उनमें साइंस और स्प्रिचुआलिटी का समन्वय था। ये संस्थान आत्मा के उत्थान और स्वर्णिम दुनिया लाने का कार्य कर रही है। इस संदेश को सभी तक पहुंचाने की जरूरत है।
वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रवीण कुमार मेहता, महानिदेशक, डीआरडीओ, डिफेंस मंत्रालय, भारत सरकार

पर्यावरणविद् पद्मश्री डॉ. प्रकाश आम्टे के उद्गार....

प्रेम-स्नेह से खूंखार जंगली जानवरों को बना सकते हैं दोस्त

समापन सत्र में महाराष्ट्र से पधारे देश के जाने-माने पर्यावरणविद्, समाजसेवी पद्मश्री डॉ. प्रकाश आम्टे ने कहा प्रेम-स्नेह में इतनी शक्ति है कि खूंखार जंगली जानवरों को भी अपना दोस्त बना सकते हैं। जिन जानवरों को हम खतरनाक कहते हैं वो आज मेरे घर के सदस्य हैं। कॉलेज में एमबीबीएस की पढ़ाई के दौरान मन में आया कि हमें समाज के सबसे पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए कुछ करना है। पढ़ाई के बाद संकल्प लिया और आदिवासियों की सेवा के लिए निकल पड़े। इसमें धर्मपत्नी मंदाकिनी ने पूरा साथ दिया और कंधे से कंधा मिलाकर हमेशा खड़ी रहीं। सुविधा संपन्न जीवनशैली छोड़कर घास-फूस की रोटी खाकर तमाम परेशानियों का सामना करते हुए हम पति-पत्नी लोगों की सेवा में जुटे रहे। मन में एक ही संकल्प था कि हमारे इन भाई-बहनों को भी समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है। इनके बीच 45 साल गुजर गए पता ही नहीं चला। पद्मश्री डॉ. आम्टे ने कहा आदिवासियों की सेवा में मेरे बेटे-बहू भी पूरा साथ दे रहे हैं। मुझे गर्व होता है कि हमारे परिवार की चौथी पीढ़ी लोगों की सेवा में पूरी तन्मयता के साथ लगी है। बता दें कि आपने आनंदवन की स्थापना की है जहां जंगली जानवरों पशु-पक्षियों को पाला-पोसा जाता है। साथ ही कुष्ठ रोगियों के लिए वर्षों से काम कर रहे हैं।



ट्रस्टी बनकर करें इस्तेमाल, उतना ही लें जितनी जरूरत हो

हमें पर्यावरण की रक्षा करने के लिए अपनी पुरानी परंपरा और नई तकनीक को साथ लेकर चलना होगा। मनुष्य समझता है कि पूरी प्रकृति केवल उसके इस्तेमाल के लिए है, ये सोच ठीक नहीं है। महात्मा गांधी ने कहा था हमें ट्रस्टी होकर वस्तुओं का इस्तेमाल करना होगा। ब्रह्मा बाबा ने वर्षों पहले अपनी दिव्य दृष्टि से एटॉमिक, प्राकृतिक जैसे तीन तरह के विनाश देख लिए थे, वही आज हम सामने देख रहे हैं। पर्यावरण को बचाने के लिए हमें प्रकृति से उतना ही लेना होगा, जितनी जरूरत है। आज हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी परंपरा और तकनीक को साथ लेकर चलने के कारण चैंपियन ऑफ द वर्ल्ड का सम्मान मिल रहा है।

पद्मश्री डॉ. कार्तिकेय साराभाई, फाउंडर-डायरेक्टर व साइंटिस्ट, अहमदाबाद

घटता भू-गर्भीय जलस्तर चिंता का विषय, जागरूकता लाना जरूरी

ब्रह्माकुमारी संगठन पर्यावरण व जल संरक्षण को लेकर संवेदनशील है। संस्थान द्वारा सौर ऊर्जा के क्षेत्र में लंबे समय से बहुत ही अच्छा कार्य किया जा रहा है। आज घटता भू-गर्भीय जलस्तर चिंता का विषय है। हम सभी को मिलकर जल संरक्षण को लेकर व्यापक स्तर पर जन जागरूकता लाने की जरूरत है। जल रहेगा तो धरती पर जीवन रहेगा। इस तरह के सम्मेलन से लोगों में पर्यावरण को लेकर जागृति आती है।
- जल योद्धा अय्यपा मसाजी, जल साक्षरता नींव के संस्थापक, बैंगलुरु

खेत से पहले कृषक के मन में आध्यात्मिकता के बीज बोने होंगे

वर्तमान समय देश की पुकार है पौष्टिक और सात्विक अन्न उत्पादन। सभी समस्याओं का हल, हल में समाया है। प्राचीन कृषि पद्धति को फिर से अपनाकर शुद्ध व सात्विक अन्न देना होगा। सबसे पहले भारत की शान किसान को सशक्त बनाना होगा। आध्यात्मिकता से ही किसान सशक्त बनेंगे। खेत से पहले कृषक के मन में आध्यात्मिकता के बीज बोने होंगे। उसके मन में जो द्वेष, ईर्ष्या, नफरत, तेरे-मेरे का जहर भरा हुआ है, जब तक मानसिक प्रदूषण समाप्त नहीं होगा, तब तक हम उत्तम खेती नहीं कर सकते हैं। संस्थान से जुड़कर आज हजारों किसान जैविक-यौगिक खेती कर रहे हैं। इसे लेकर प्रभाव ने किसान सशक्तिकरण अभियान के रूप में प्रोजेक्ट बनाया है। किसानों को प्रैक्टिकल ट्रेनिंग देकर 'शाश्वत जैविक-यौगिक खेती' के प्रति जागृति ला रहे हैं।
बीके सरला बहन, अध्यक्ष, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज

पर्यावरण बचाने के लिए प्लास्टिक का उपयोग कम करना होगा

आज दुनिया में बेस्ट सबसे बड़ी समस्या है। हिमालय में प्लास्टिक, बैग के बेस्ट का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इससे हिमालय में बड़ी समस्या खड़ी होती जा रही है। हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा कि पर्यावरण बचाने के लिए प्लास्टिक का उपयोग कम करें। पर्यावरण संरक्षण के लिए ये बहुत जरूरी है। माउंट आबू आकर बहुत अच्छा लगा। ये संस्थान पर्यावरण बचाने के लिए बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है।
प्रियदर्शिनी श्रेष्ठ, को-ऑर्डिनेटर, कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान, गंगटोक

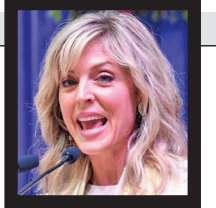
वैश्विक शिखर सम्मेलन के लिए राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने मेजा बधाई पत्र....

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने सम्मेलन की सफलता के लिए शुभकामना संदेश भेजा है। खुशी जाहिर करते हुए इसे बहुत ही उपयोगी और सार्थक बताया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी बधाई पत्र भेज कर हर्ष जताया। पत्र में लिखा है विश्व सुधार के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने वाले संस्थान को डायनेमिक वर्ल्ड लीडर अर्वाइंड लेने की मुबारक देता हूँ। विज्ञान एवं आध्यात्म के सामंजस्य से ही मानवता का स्थिर भविष्य संभव है। इस तालमेल में पर्यावरण भी अति महत्वपूर्ण है। ब्रह्माकुमारीज विश्वभर की आत्माओं का आध्यात्मिक रूप से आंतरिक बदलाव का कार्य कर रही है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस मंच से विश्व शांति का संदेश जाएगा।

- एकेपी हीलिंग इंडिया की संस्थापक डॉ. अमित कौर पुरी ने कहा कि सबसे बड़ी एनर्जी का सोर्स धरती है। धरती से ही हम सभी को ऊर्जा मिलती है। आज हम सभी को ऊर्जा संरक्षण करने की जरूरत है।
- मुंबई से पधारे टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के डिप्टी डायरेक्टर पद्मश्री प्रो. रामाकृष्णा वी होसुर ने कहा कि ईमानदारी, सत्यता, दृढ़ता, नम्रता वैज्ञानिक पद्धति से विकसित नहीं होगी, इसके लिए आध्यात्म जरूरी है। अंतचेतना में ही ज्ञांकने से परमात्मा की अनुभूति होगी। भगवत गीता के ज्ञान को आत्मसात करने की जरूरत है। परमात्मा से रिश्ता जोड़ने के लिए गीता ज्ञान के अनुसार स्वयं का जीवन मर्यादा पुरुषोत्तम बनाना होगा। आध्यात्मिकता से ही सुख-शांति, पवित्रता, निःस्वार्थ प्यार और एकता आ सकती है।

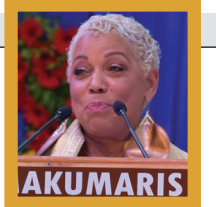
विदेशी शिखरियों ने भी माना आध्यात्म का लोहा

हम सभी को शाकाहार अपनाना होगा



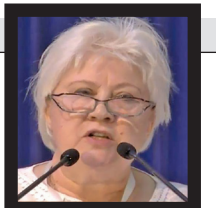
अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पूर्व पत्नी, टीवी एक्ट्रेस व सिंगर मारला मैपल ने कहा कि अमेरिका इन दिनों कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। मैंने कुंडलिनी योग, ब्रह्माकुमारीज के राजयोग मेडिटेशन और शाकाहारी भोजन को अपनी दिनचर्या में शामिल किया है। मैंने कई तरह का भोजन किया है, लेकिन शाकाहार सबसे उत्तम है। मांसाहार से पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचता है। हम सब मिलकर ही इस दुनिया को आगे ले जा सकते हैं। मुझे यहां घर जैसा अनुभव हो रहा है। यहां सभी में समानता और एकता का भाव दिया। भारत बहुत ही सुंदर देश है। माउंट आबू की हरी-भरी वादिया बहुत ही सुंदर हैं।

वन गॉड, वन फैमिली का संदेश



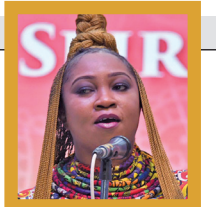
यूएसए से पधारी सीनियर जर्नलिस्ट व टीवी एंकर रोलांडा वाट ने कहा कि मैं कर्मों की पारदर्शिता पर विश्वास करती हूँ। हम सभी में प्रेम और शांति होना चाहिए। ईश्वर के बिना जीवन अंधकारमय हो जाता है। यहां एक साथ सात हजार लोग देखकर अभिभूत हूँ। विदेश में तो एकसाथ 300 लोग भी इक्वेटरी नहीं होते हैं। क्योंकि यहां गॉड से लव करने की शिक्षा दी जा रही है। साथ ही वन गॉड, वन फैमिली का संदेश दिया जा रहा है। मैं यहां ईश्वरीय शक्ति का अनुभव कर रही हूँ। आज इस संदेश को सभी तक पहुंचाने की जरूरत है।

मेडिटेशन सभी के लिए बहुत जरूरी



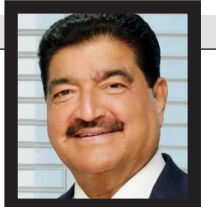
रशिया से पधारी सेंटपीटर्स बर्ग की स्टेट काउंसिलर जज व संवैधानिक अदालत के न्यायाधीश सचिव कुल्योवा लियूडमिला ने कहा माउंट आबू आकर बहुत शांति का अनुभव कर रही हूँ। यहां आकर आध्यात्म के बारे में गहराई से जानने का मौका मिला। मेडिटेशन हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। इससे हम हम मानसिक विकृतियों को दूर कर सकते हैं।

हिंदी में गीत गाकर किय भाव-विभोर



नाइजीरिया से पधारी सिस्टर आरा रोला ने कहा कि मैं परमात्मा के बुलावे पर ही यहां आई हूँ। आत्मा का कोई देश नहीं होता न ही वह किसी सीमा में बंधती है। मुझे यहां आकर ऐसा लगा जैसे मैं अपने ही घर में आ गई। आध्यात्म हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। पहली बार भारत आई सिस्टर आरा ने हिंदी में गीत गाकर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

राजयोग से की शांति की अनुभूति



अबूबाबी से आए एनएमसी हेल्थकेयर के चेयरमैन व संस्थापक डॉ. बीआर शेटी ने कहा कि मैं इस संस्था से पिछले 50 साल से जुड़ा हूँ। यहां जो आध्यात्म और मेडिटेशन की शिक्षा दी जा रही है उससे लोगों की जिंदगी बदल रही है। मेडिटेशन से मैंने शांति की अनुभूति की। मेरी जिंदगी आसान हो गई। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ राजयोग एक चमत्कारिक विधि है।

विश्व शांति का संदेश दे रही बहनें



नेपाल से पधारे विधायक भोजाप्रसाद श्रेष्ठ ने कहा कि महात्मा बुद्ध का जो शांति स्थापन का कार्य अधूरा रह गया था उसे ब्रह्माकुमारी बहनें पूरा कर रही हैं। यहां से विश्व शांति और प्रकाश की किरणें पूरे विश्व में फैल रही हैं। कम बोलो, नीटा बोलो, धीरे बोलो ये महावाक्य यहां के प्रत्येक भाई-बहन के जीवन में देखने को मिला। व्यवस्था और मैनेजमेंट सीखने लायक है।

आध्यात्म से ही आणगी विश्व शांति



नेपाल से पधारी विधायक अनीता देवकोटा ने कहा कि यहां से वसुधैव कुटुम्बकम और सकारात्मक सोच का संदेश दिया जा रहा है। मौलिक विज्ञान से जीवन सार्थक नहीं होगा। इसके लिए आध्यात्म- विज्ञान को अपनाना होगा। आध्यात्म के बल से ही विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

श्रेष्ठ कर्म से स्वर्णिम दुनिया आणगी



डेनमार्क में ब्रह्माकुमारीज की पर्यावरण संरक्षण की डायरेक्टर बीके सोन्या ओहल्सन ने कहा कि हमारे एक-एक श्रेष्ठ कर्म से स्वर्णिम दुनिया आणगी। इसके लिए सबसे पहले हमें अपनी सोच को बदलना होगा। खुशी जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। सादगीपूर्ण जीवन और राजयोग मेडिटेशन यहां की पहचान है। स्वर्णिम दुनिया लाने के लिए सभी को कदम बढ़ाना होगा।

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बोले: ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाएं मानव को ले जा रही सही दिशा में



विश्वव्यापी संगठन ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही हैं सेवाएं मानव को सही दिशा में ले जा रही हैं। संसार को जिस शांति की जरूरत है, उस वातावरण का निर्माण यहां हो रहा है। कम बोले, धीरे बोले, मीठा बोले ये शब्द यहां मंत्र की तरह कार्य करते हैं। पवित्रता आत्मा की मूल संपदा है। यहां से मन, बुद्धि और कर्मों को शांति के पथ पर ले जाने के लिए आध्यात्मिकता की शिक्षा दी जा रही है। इस संस्था की पवित्रता हर मानव को आध्यात्म से परिपूर्ण करने में मदद करती है। इस संस्था की पर्यावरण संरक्षण से लेकर अन्य सामाजिक गतिविधियां कबिले तारीफ हैं। अर्जुन और श्रीकृष्ण का वास्तविक संवाद का रहस्य समझने की जरूरत है जो यहां पर स्पष्टीकरण हो रहा है। परमात्म शक्ति से स्वयं को चार्ज करने के लिए स्व के अंदर सोल पॉवर को जानना जरूरी है।

► चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा, सुप्रीम कोर्ट, भारत

सभी समस्याओं का कारण आध्यात्म से दूरी बढ़ना



संस्था सद्मार्ग पर चलने, विश्व शांति की कल्पना को साकार करने, वसुधैव कुटुम्बकम्, जीयो और जीने दो का सद्मार्ग स्थापित करने का कार्य कर

रही है। आज दुनिया में अशांति और समस्याओं का कारण आध्यात्म से दूरी बढ़ना है। बिना आध्यात्म को अंगीकार किए विश्व शांति, सर्वे संतु निरामया की परिकल्पना साकार नहीं हो सकती है।

► धारचंद गहलोत, सामाजिक न्याय, केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार

जो अपनी विधा में कीर्तिमान स्थापित करे वही लीडर: मंत्री रीता बहुगुणा



लीडर वही होता है जो अपनी विधा में कीर्तिमान स्थापित करे। ब्रह्मा बाबा ने ऐसे समय में बेटियों को आगे बढ़ाया जब भारत की लड़कियों को शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं थी। ब्रह्मा बाबा द्वारा लगाया गया एक छोटा सा पौधा आज वटवृक्ष का रूप ले चुका है। हमने दुनिया को अनेक धर्म और फिलॉसफी दी है। ब्रह्माकुमारी बहनें एकता का सिद्धांत विश्वभर में दे रही हैं। बहनों द्वारा जो शांति, पवित्रता, भाईचारा, प्रेम का संदेश दिया जा रहा है यदि इनमें से हम एक बात ही ग्रहण कर लें तो जीवन सुधर जाएगा। ब्रह्माकुमारी बहनें विश्वभर में शांति का संदेश फैला रही हैं। यहां से जुड़े लोगों को ईश्वर ने दूत बनाकर भेजा है। ये हमारे लिए गौरव की बात है। ये संस्था नारी शक्ति की मिसाल है।

यहां सभी धर्म-जाति के लोग, ये आध्यात्म का कमाल...

यहां हर धर्म, जाति और संप्रदाय के लोग हैं ये हमारे देश की महानता और आध्यात्म का ही कमाल है। अपनी चेतना और वजूद को समझना ही आध्यात्म है। आध्यात्म का अर्थ वैराग्य लेना नहीं है। आध्यात्मिक शक्ति का ही कमाल है जो स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में अपने उद्बोधन से विश्वभर में आध्यात्मिक संदेश दिया था। जिस दिन हम मान लेंगे कि जल ही जीवन है तो प्रदूषण नहीं करेंगे। गंदे नालों और सीवरेंज का पानी गंगा में छोड़ने से हालत ये हो गई कि आज इसमें स्नान करना मुश्किल है। प्रदूषण रोकने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। प्रधानमंत्री संदेश दे रहे हैं कि स्वच्छता ही सेवा है, जिस दिन हम इसे धारण कर लेंगे तो गंदगी नहीं रहेगी।

► रीता बहुगुणा जोशी महिला, परिवार व बाल कल्याण एवं टूरिज्म मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

देशभर से पधारे नेताओं के उद्गार...

लीडरशिप की सोच बदलना होगी



आज इस देश के लीडरशिप में इस सोच को भरना होगा कि हम गलत कामों से, गलत कृति से, गलत विचारों से देश को आगे नहीं चलाएंगे। तो हमारा देश उस नेतृत्व में चलेगा कि विज्ञान कितना भी आगे बढ़े, रामराज्य की सोच कायम रहेगी। देश आर्थिक दृष्टि से कितना भी संपन्न रहे। हमारा देश भगवान श्रीकृष्ण, श्रीराम, बुद्ध, महावीर का है। इस देश का आध्यात्म नहीं बदलेगा। आध्यात्म हमें सिखाता है कि ज्योत से ज्योत जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो। रोजाना एक व्यक्ति 21,999 बार सांस लेता है। यदि मार्केट रेट के हिसाब से लगाएं तो 2100 रुपए का ऑक्सीजन पेड़ हमें रोज देते हैं। इस हिसाब से 80 वर्ष में एक पेड़ से हमें 6,13,20,000 रुपए की प्राणवायु मिलती है। हमने कहा वन से धन तक और जंगल से मंगल तक जाना है। इसे लेकर ही हमने पेड़ लगाओ अभियान शुरू किया है। इसमें लक्ष्य से ज्यादा पौधरोपण किया। वृक्ष बचाने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। पर्यावरण बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। आज संयुक्त राष्ट्र संघ भी जीडीपी की जगह प्रति व्यक्ति की खुशी पर बात करता है।

► सुधीर मुंगातीवर, वित्त, निर्माण और वन मंत्री, महाराष्ट्र



मुझे जानकर आश्चर्य हुआ कि ये संस्था पर्यावरण संरक्षण से लेकर बेटों बचाओ-बेटा पढ़ाओ, नशा मुक्ति, जैविक-यौगिक खेती आदि क्षेत्रों में कार्य कर रही है। ये बहुत ही सराहनीय कार्य है। साथ ही संस्था द्वारा देश के नामी विश्व विद्यालयों से एम.ओयू कर मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा दी जा रही है।

► रामशंकर सिंदे, जल संरक्षण और प्रोटोकॉल मंत्री, महाराष्ट्र

जीवन जीने की कला सिखा रही ब्रह्माकुमारीज़



ब्रह्माकुमारीज़ जीवन जीने की कला सिखा रही है। भारत की संस्कृति व मूल्यों को फिर से विश्वभर में फैला रहा है। पश्चिम की सोच और हमारी सोच में भारी अंतर है। पश्चिम के लोग विश्व को व्यापार की दृष्टि से देखते हैं। हमारी संस्कृति सिखाती है कि विश्व एक परिवार है। विज्ञान को आध्यात्म से जोड़कर इसके दुष्परिणाम कम कर सकते हैं। संस्था द्वारा राष्ट्र के जीवन मूल्य को फिर से दुनियाभर में पहुंचाया जा रहा है। आज इस मंच से मैं प्रण लेकर जा रहा हूँ कि संस्था द्वारा किए जा रहे समाज परिवर्तन के कार्य से जुड़ा रहूंगा।

► वीरेंद्र कवर, मंत्री, ग्राम विकास व पंचायती राज, हिमाचल प्रदेश

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार....



● बैंगलुरु से पधारी अन्याथ बच्चों की मां (मदर ऑफ ऑफेंस) के नाम से मशहूर 1050 बच्चों को संभाल रहीं डॉ. सिंधुताई सपकाल ने कहा कि जीवन में सदा चलना सीखो, रुकना नहीं। मन की आवाज सुनें, कफन की जेब नहीं होती है, मरने की कभी सिफारिश नहीं होती। त्याग करना सीखो। दूसरों की दुःख में भागी बनो। हर संभव लोगों की मदद करो।

● अरुणकोत्ताई की श्रीरामलिंगा स्पिनर्स प्रा. लि. की एमडी ब्रह्माकुमारी सिस्टर कोठाई धीनाकरन ने कहा कि मैं अपने विश्वास और अनुभव से कह सकती हूँ कि यदि आपको परमात्मा पर संपूर्ण निश्चय और विश्वास है तो उनकी मदद हमें हर पल महसूस होती है। जब हम परमात्मा को सच्चे दिल से याद करते हैं तो वह हमारे सामने रक्षक बनकर खड़े हो जाते हैं। ईश्वर तो बस भाव का भूखा है वह हमारे भाव को पढ़ लेता है। जीवन में सदा सच्चाई और सफाई रखें।

● उप्र के पूर्व शिक्षा मंत्री व राष्ट्रीय दिव्यांग सभा के अध्यक्ष अमरजीत सिंह 'जनसेवक' ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक आध्यात्मिक विश्व विद्यालय के साथ मनोवैज्ञानिक विश्व विद्यालय भी है। इस संस्था से जुड़ने के बाद मेरी सोच में भारी बदलाव आया। यहां हमारे हृदय की सफाई होती है। एक दिन आया जब पूरे हिंदुस्तान की पार्लियामेंट यहां शिक्षा लेने आयी।

● बॉलीवुड व टीवी एक्ट्रेस सुषमा सेठ ने कहा कि यहां आकर सभी का व्यवहार देखकर आनंद आया। संस्था ने विश्वभर में जो बदलाव लाया है। आज विश्वभर के लोग हमारा आध्यात्म और योग सीख रहे हैं।

● नई दिल्ली से आए ट्राई के चेयरमैन रामसेवक शर्मा ने कहा कि यहां जैसा अनुशासन और व्यवस्था बहुत कम संगठनों में ही मिलती है। संस्था साइंस से लेकर पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य कर रही है। यहां बताया जाता है कि हम घर-गृहस्थ में रहकर परमात्मा से जुड़ सकते हैं। राजयोग मेडिटेशन बहुत ही पावरफुल है। आज सभी को आध्यात्म से जुड़ने की जरूर है। मानसिक समस्याओं को इससे दूर किया जा सकता है।

मन की परिधी को बढ़ाते जाएं, सुख-शांति की मात्रा बढ़ती जाएगी...

गृहमंत्री राजनाथ सिंह



गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने इन बातों पर भी दिया जोर...

- ❖ मन की परिधी को बढ़ाते जाएं सुख-शांति भी बढ़ती जाएगी। मन से ही सब नियंत्रित होता है।
- ❖ ये संस्था लोगों में देवत्व का भाव लाने का कार्य कर रही है। जो सराहनीय प्रयास है।
- ❖ सभी आध्यात्मिक ग्रंथ वेदों से ही निकले हैं। हमारे यहां गणित, विज्ञान और चिकित्सा सभी वेदों से मिले हैं। ये सिर्फ भारत में ही मिल सकती है।
- ❖ मैं पिछले 8 साल से यहां आने की सोच रहा था लेकिन आ नहीं पा रहा था। यहां वही व्यक्ति आ सकता है जिसे आध्यात्मिक शक्ति बुलाती है।
- ❖ यहां आकर ईश्वरीय बाइब्रेशन की अनुभूति हुई।
- ❖ विज्ञान ने भी साबित किया है कि पूरा ब्रह्मांड एक अणु से बना है। स्पेस साइंस ये साबित कर चुका है कि भगवान शिव निरंतर सृष्टि के सृजन और विध्वंस का कार्य करते रहते हैं।
- ❖ मनुष्य कभी प्रशंसा से बड़ा नहीं हो सकता, वह सिर्फ जीवन में अपनी कृतियों के माध्यम से ही विभूषित हो सकता है।
- ❖ कभी भी छोटा नहीं सोचें, जीवन में हमेशा बड़ा सोचें तो बड़ा करने का प्रयास करेंगे।

आध्यात्मिक शिखरसभ्यतों के विचार...

हम सब एक परमात्मा की संतान हैं



हम सब एक परमात्मा की संतान आपस में भाई-भाई हैं। इसलिए एक-दूसरे का सहयोग करें, प्रेम से रहें और एक-दूसरे को खुशी दें। आपस में कभी भी बैर भाव, द्वेष, ईर्ष्या न रखें।

भारत में एक समय स्वर्णिम दुनिया थी। जहां सुख-शांति और आनंद था। हम अपने कर्मों को दिव्य बनाकर फिर से स्वर्णिम दुनिया बना सकते हैं।

► राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुंय प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

शांति का संदेश दे रहीं बहनें



ब्रह्मा बाबा ने ब्रह्माकुमारी बहनों को तैयार कर विश्व शांति के पावन कार्य में लगाया। बाबा ने ध्यान, योग और ओम शांति के महामंत्र से जो ये पावन धाम बनाया है इसे देखकर मन को बहुत प्रसन्नता हुई। यहां से पूरे विश्व में शांति की किरणें फैल रही हैं।

► महामंडलेश्वर स्वामी हरिओम गिरी महाराज, नई दिल्ली

मन को बनाएं योगस्थल



वैश्विक शिखर सम्मेलन में पधारे सभी अतिथियों को दिल से आभार। आज यहां से सभी संकल्प लेकर जाएं कि अपने मन को युद्धस्थल नहीं, योग स्थल बनाएं। यही सम्मेलन की सफलता का आधार है।

► बीके मूल्युजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार....



● बैंगलुरु से पधारी अन्याथ बच्चों की मां (मदर ऑफ ऑफेंस) के नाम से मशहूर 1050 बच्चों को संभाल रहीं डॉ. सिंधुताई सपकाल ने कहा कि जीवन में सदा चलना सीखो, रुकना नहीं। मन की आवाज सुनें, कफन की जेब नहीं होती है, मरने की कभी सिफारिश नहीं होती। त्याग करना सीखो। दूसरों की दुःख में भागी बनो। हर संभव लोगों की मदद करो।

● अरुणकोत्ताई की श्रीरामलिंगा स्पिनर्स प्रा. लि. की एमडी ब्रह्माकुमारी सिस्टर कोठाई धीनाकरन ने कहा कि मैं अपने विश्वास और अनुभव से कह सकती हूँ कि यदि आपको परमात्मा पर संपूर्ण निश्चय और विश्वास है तो उनकी मदद हमें हर पल महसूस होती है। जब हम परमात्मा को सच्चे दिल से याद करते हैं तो वह हमारे सामने रक्षक बनकर खड़े हो जाते हैं। ईश्वर तो बस भाव का भूखा है वह हमारे भाव को पढ़ लेता है। जीवन में सदा सच्चाई और सफाई रखें।

● उप्र के पूर्व शिक्षा मंत्री व राष्ट्रीय दिव्यांग सभा के अध्यक्ष अमरजीत सिंह 'जनसेवक' ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक आध्यात्मिक विश्व विद्यालय के साथ मनोवैज्ञानिक विश्व विद्यालय भी है। इस संस्था से जुड़ने के बाद मेरी सोच में भारी बदलाव आया। यहां हमारे हृदय की सफाई होती है। एक दिन आया जब पूरे हिंदुस्तान की पार्लियामेंट यहां शिक्षा लेने आयी।

● बॉलीवुड व टीवी एक्ट्रेस सुषमा सेठ ने कहा कि यहां आकर सभी का व्यवहार देखकर आनंद आया। संस्था ने विश्वभर में जो बदलाव लाया है। आज विश्वभर के लोग हमारा आध्यात्म और योग सीख रहे हैं।

● नई दिल्ली से आए ट्राई के चेयरमैन रामसेवक शर्मा ने कहा कि यहां जैसा अनुशासन और व्यवस्था बहुत कम संगठनों में ही मिलती है। संस्था साइंस से लेकर पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य कर रही है। यहां बताया जाता है कि हम घर-गृहस्थ में रहकर परमात्मा से जुड़ सकते हैं। राजयोग मेडिटेशन बहुत ही पावरफुल है। आज सभी को आध्यात्म से जुड़ने की जरूर है। मानसिक समस्याओं को इससे दूर किया जा सकता है।



▶ प्रेरणापुंज

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

महावीर का काम है मूर्छित को सुरजीत बना देना

एक बहुत अच्छी गुप्त सहज साधना है परमात्मा बाप की अति स्नेह की शक्ति। जिस स्नेह की शक्ति ने हमारे ऊपर काम किया है। हरेक अपने आपको अंदर देखे बाबा के प्यार की शक्ति ने मेरे ऊपर काम किया है? ज्ञान की धारणा भी हुई है तो बाबा के प्यार में, प्यार मिला है धारणा करने से, योगी बनने से। सच्चा योगी, निरंतर योगी साक्षात् बाप का रूप है। जब साक्षात् बाप का रूप बनता है तो क्या करेगा? जो बाप ने प्यार दिया है वह औरों को देगा। योग माना परमात्मा प्यार का अधिकारी बनना। योग का फल और बल जो है वह औरों को मिलता रहेगा। वह स्नेह की शक्ति अपने आप अनेक कार्य करती रहेगी। सिर्फ अपने को निश्चित, निरसंकल्प, निश्चय बुद्धि की कला आनी चाहिए।

16 कला संपूर्ण बनने के लिए निश्चय बुद्धि की कला बड़ी अच्छी कला है। जैसे कोई कलाकार होते हैं तो कहते हैं इनको ये कला भगवान की तरफ से कुदरती देन है। क्योंकि यह कला कोई पुरुषार्थ से नहीं आती है। उनके पास वह नैचुरल होती है। जिससे वह सबको अच्छी लगती है। यह भी निश्चय कि जो कला है, उस निश्चय में कितना बल है। भगवान हमारे निश्चय को देख कहते कि कुछ भी हो जाता है, यह मेरा बच्चा कभी भी नीचे-ऊपर नहीं होता है। महावीर का काम है मूर्छित को सुरजीत बना देना। वह खुद कभी घबराता नहीं है। बाबा ने कहा कभी घबराओ मत, जरा सा भी ऊपर-नीचे होता है तो हम घबराते नहीं हैं। अगर अंदर से थोड़ा घबराया तो यह भी निश्चय की कमी है। कुछ हो न जाए, कभी ख्याल आ नहीं सकता है, कुछ नहीं होगा। इतना अंदर निश्चय का बल हो तो विजय हुई पड़ी है। लेकिन खुद विजयी कैसे बनें? निश्चय के बल से।

स्थापना के कार्य में शुरू से लेकर सफलता मिलती आ रही है। वह काम तो बाबा का है लेकिन हम बच्चे विजयी माला में कैसे आए? निश्चय के आधार से। कार्य बाबा का, ड्रामा में हुआ ही पड़ा है, होने वाला ही है। परन्तु हम जब निमित्त हैं तो निमित्त बनने वाले को अगर विजयी माला में आना है तो निश्चय में विजय कितनी समाई पड़ी है। वह अनुभव करते चले। कैसी भी बात हो बाबा ने बड़ी अच्छी बात कही कि कितने बड़े काले बादल जैसे भी आ जाएं परन्तु वह बादल बिखरने वाले हैं। शुरू-शुरू में मुझे यह गीत अच्छा लगता था- आज नहीं तो कल बिखरेंगे यह बादल...।

कैसी भी सीन आए फट से गीत याद आए कि आज नहीं तो कल बिखरेंगे यह बादल... आज यह बात आई है कल चली जाएगी। पास हो जाएगी। अभी तो अनुभव ही गए हैं। इसलिए कोई भी बात सामने आती है तो हर्षितमुख से, हर्षितचित्त से पार हो जाते हैं। वह बात अंदर चिंतन में नहीं लाएं। चिंतन में लाया तो चित्त हर्षित नहीं रहेगा। फिर भी अगर कोई बात बार-बार सामने आती है तो बाबा ने बहुत सहज विधि बता दी है, बाबा को वा बड़ो को सुना दो, तुम हल्के हो जाओ।

अगर फिर भी चिंतन करते हैं तो हम बड़ों की दुआएं, मदद, उनकी शुभ भावनाएं खींच नहीं सकते हैं। हमें अपने को चिंतन से फ्री करना है। महावीर की तरह अचल-अडोल रहना है। तो इधर-उधर से सेवा करके फिर आ करके भगवान के आगे बैठ जाओ। महावीर क्या करता था? इशारा मिला यह गया फिर आ करके उसके चरणों में बैठ गया। फिर जो हुक्म...। इतना निश्चित रहने से बाबा जाने, बाबा का काम जानें। करन-करावनहार बाबा और बुद्धिवानों का बुद्धि है। कईयों से ऐसे करा लेता है जो असंभव बातें हो जाती हैं। इसलिए असंभव शब्द हम ब्राह्मणों की डिक्शनरी में है ही नहीं। हमारी डिक्शनरी में सबकुछ सहज है। सब आसान है। हुआ ही पड़ा है। जब कलियुग के पहाड़ को हटाने वाले, सतयुग को हम लाने वाले हैं, सारी प्रकृति को सतोप्रधान बनाने वाले हैं तो क्या नहीं हो सकता है। सबकुछ हो सकता है। फिर भी यह आगे-पीछे आएंगे। निश्चय में विजय समाई पड़ी है। एक बल एक भरोसा है। इसमें सिर्फ सच्ची भावना रखो। दिल साफ है तो मुराद हासिल हो जाती है। जो संकल्प करेंगे वह साकार होगा, यह भी एक गारंटी है। सिर्फ कोई स्वार्थ वाला संकल्प न हो, निः स्वार्थ भाव वाला संकल्प हो। तो ऐसा संकल्प साकार हुआ ही पड़ा है। अंदर ऐसा शांत और निर्मानचित रहो तो लगेगा कि मेरे जैसा सुखी संसार में कोई नहीं है। फिर बाबा की मदद भी हर पल महसूस होगी। इससे हर पल उड़ती कला का अनुभव करेंगे।

33 पानसेमल, बड़वानी विधायक दीवान सिंह से धर्म, राजनीति और आध्यात्म पर विशेष बातचीत..

राजनीति से बढ़कर सेवा करने का दूसरा कोई क्षेत्र नहीं है: विधायक

सभी क्षेत्रों की तरह राजनीति में भी हुआ मूल्यों का पतन, विधायक बोले- वंशवाद की राजनीति में विश्वास नहीं रखता हूँ, प्रतिभाओं को मिले मौका ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान से लोगों को मिल रही नई दिशा, ये एक क्रांति की शुरुआत है



शख्सियत

शिव आमंत्रण ▶ आबू रोड। आध्यात्म एक ऐसा विषय है जिसमें जितने गहराई से आप उतरते जाएंगे, उतना कम पड़ता जाता है। इसकी कोई गहराई नहीं है। विश्व शांति का संदेश लेकर स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का जो कार्य ब्रह्माकुमारीज संस्था कर रही है वह अविस्मरणीय है। इस तरह निःस्वार्थ भाव से पूरे विश्व में कोई भी संस्था लोगों के आध्यात्मिक, बौद्धिक, चारित्रिक, सामाजिक और पारिवारिक उत्थान के लिए शायद ही कार्य कर रही हो। इस ज्ञान से लोगों को जीवन में एक नई दिशा मिल रही है। ये समाज में एक क्रांति की शुरुआत है। भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था जो परिकल्पना यहाँ साकार की जा रही है।

ये कहना है मप्र बड़वानी जिले के पानसेमल से विधायक दीवान सिंह का। मप्र कृषि कमेटी में सदस्य 58 वर्षीय विधायक सिंह के माउंट आबू आगमन पर शिव आमंत्रण से उन्होंने धर्म, आध्यात्म, वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य और व्यक्तिगत जीवन पर खुलकर बात की। साथ ही स्वच्छ राजनीति को लेकर अपनी राय जाहिर की। उन्होंने कहा कि आज सभी के लिए आध्यात्म से जुड़े रहना बेहद जरूरी है। मेरी कोशिश रहती है कि मैं सर्वोच्च शक्ति के साथ जुड़ा रहूँ। क्योंकि आगे बढ़ने में परमात्म शक्ति ही हमारी मदद करती है। मेंडिटेशन से मन को बहुत ही सुकून और शांति मिलती है। आपने वर्ष 1984 में गांव के पंच से अपने राजनीतिक सफर की शुरुआत की थी। आइए जानते हैं विधायक सिंह के विचार...

सवाल: आपने राजनीति में बहुत ही छोटे स्तर से शुरुआत की थी और आज विधायक हैं, इस सफर को कैसे देखते हैं?

जवाब: हमेशा किसी भी बड़े कार्य की शुरुआत एक बहुत ही छोटे स्तर से ही होती है। मैंने वर्ष 1984 में पंच पद से राजनीति में प्रवेश किया। इसके बाद गांव का सरपंच चुना गया। इसके बाद भाजपा के टिकट पर विधायक का पहला चुनाव वर्ष 1998 में लड़ा जो हार गया। सरकार दो साल में ही गिर गई और वर्ष 1990 में फिर से मैदान में उतरा और अच्छे बहुमत से जीत दर्ज की। वर्ष 1993 के चुनाव में फिर पराजित हुई। इसके बाद 2003 में फिर से भाजपा के टिकट पर मैदान में उतरा और चुनाव जीता। फिर 2008 में टिकट नहीं मिला। इसके बाद 2013 में फिर से चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचा। राजनीतिक जीवन उतार-चढ़ाव भरा रहा लेकिन कभी हार नहीं मानी। राजनीति में जनता जनार्दन का निर्णय सर्वोपरि होता है जिसे मैं दिल से स्वीकार करता हूँ। आप किसी भी क्षेत्र में हों हार-जीत जीवन का हिस्सा है।

सवाल: राजनीति में सरकार से लेकर पार्टी, कार्यकर्ता और जनता सभी को साथ लेकर चलना होता है, आप कैसे मैनेज करते हैं?

जवाब: मैं राजनीति को सेवा मानकर करता हूँ। जनता के बीच रोज 18 घंटे बिताता हूँ। उनकी समस्याओं को सुनता हूँ और उन्हें सुलझाने का हर संभव प्रयास भी करता हूँ। कुछ लोग राजनीति को कैरियर के रूप में चुनते हैं लेकिन मेरा मानना है कि जनता की सेवा करने के लिए राजनीति से अच्छा दूसरा कोई क्षेत्र नहीं है। निरंतर काम करने का भाव रहता है।

सवाल: आजकल लोकप्रियता पाने के लिए नेताओं में बयानबाजी का ट्रेंड बढ़ता जा रहा है, इस पर क्या राय है?

जवाब: मैं उल्टी-सीधी बयानबाजी में कतई विश्वास नहीं रखता हूँ। हम काम के आधार पर, मूल्यों के आधार पर ही आगे बढ़ने में विश्वास करते हैं। जो नेता श्रम नहीं करते हैं, जो जनता के बीच नहीं जाते हैं, जो उनकी सेवा नहीं करते हैं वह सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए इस तरह की उल्टी-सीधी बयानबाजी करते हैं जो कतई ठीक नहीं है। सभी क्षेत्रों की तरह राजनीति में भी मूल्यों का पतन हुआ है।

सवाल: राजनीति और वंशवाद दोनों में चोली-दामन का साथ रहा है, ऐसे में कई बार प्रतिभाएं आगे नहीं आ पाती हैं?

जवाब: मैं वंशवाद को बढ़ावा देने के विपरीत हूँ। इससे राजनीतिक परिदृश्य में सेवा से, मेहनत से जो प्रतिभाएं उभर कर आना

चाहिए वह नहीं आ पाती हैं। किसी भी पार्टी की सेहत के लिए ये ठीक नहीं है। जो राजनेता अपने बेटा-बेटी को बढ़ावा देते हैं इसके पीछे उनकी सोच होती है कि मेरी प्रतिष्ठा बनी रहे। मैं हमेशा अपने साथियों को आगे बढ़ाने में विश्वास करता हूँ।

सवाल: दिन की शुरुआत कैसे होती है?

जवाब: जल्दी उठकर घर में पूजा-पाठ के साथ दिन की शुरुआत होती है। एक बेटा, पति, पिता और एक सेवक होने का फर्ज अच्छे से निभाने की पूरी कोशिश करता हूँ। इसके बाद लोगों की सेवा के लिए निकल जाता हूँ।

सवाल: राजनीति में आ रहे युवाओं को क्या संदेश देना चाहेंगे?

जवाब: युवा राजनीति में सेवा के उद्देश्य से आए न कि कैरियर बनाने के लिए। क्योंकि यदि आपके अंदर सेवाभाव है तो ही आप इसमें आगे बढ़ सकते हैं। सदा अपनी जनता जनार्दन के सुख-दुःख में सहयोगी बनें। मूल्यों के साथ आगे बढ़ें और खुलकर विकास के मुद्दों पर अपनी राय जाहिर करें। व्यक्तिगत टीका-टिप्पणी से बचें और जनता के लिए लड़ें। जब मूल्यनिष्ठ युवा आएंगे तो राजनीतिक परिदृश्य तेजी से बदलेगा।

बीके हरीलाल
कार्यकारी निदेशक
गॉडलीवुड स्टूडियो

बच्चों के सर्वांगीण विकास का मार्ग खोलेगा स्टूडियो

गॉडलीवुड स्टूडियो दिन-प्रतिदिन नए आयाम स्थापित करता जा रहा है। इसी कड़ी में बहुप्रतीक्षित शो 'हम होंगे कामयाब' शुरू हो गया है। इसे ओम शांति यूट्यूब चैनल पर देख सकते हैं। यह ओम शांति चैनल जीओ फोन पर भी उपलब्ध है। यह कार्यक्रम बच्चों और किशोर के लिए काफी फायदेमंद साबित होगा। क्योंकि वर्तमान समय अपने दिशा से भटकती युवा पीढ़ी को सही मार्गदर्शन की जरूरत है। बच्चे कैसे अपना समय, ऊर्जा और दृष्टिकोण से अपने विकास में लगाएं इस पर पूरा फोकस किया गया है। हमारा पूरा विश्वास है कि नया शो सभी माता-पिता और बच्चों को बहुत पसंद आएगा। इसलिए इससे देखना ना भूलें। 'हम होंगे कामयाब' सिर्फ ओम शांति चैनल पर।

मप किसान सशक्तिकरण अभियान....

अन्नदाता के लिए यौगिक खेती बनेगी 'वरदान'

341	313	52	22	1.5	03	01
प्रदेश की सभी तहसीलों तक पहुंचा अभियान	प्रदेश के सभी विकासखंडों में हुए कार्यक्रम	जिलों में किसानों को बताए यौगिक खेती के गुर	किसान संदेश रथ यात्राएं प्रदेशभर में निकाली गईं	लाख से अधिक किसानों को मिला संदेश	जोनल सेवा केंद्रों द्वारा चलाया गया अभियान	माह से अधिक समय चला अभियान



किसान भाइयों को बताईं ये बातें...

- परंपरागत शाश्वत यौगिक खेती कर पौष्टिक अन्य उत्पादन का महत्व।
- व्यसन मुक्ति के लिए प्रेरित किया।
- अंध विश्वास एवं कुप्रथाओं के बारे में बताया गया।
- खेती की लागत कम करने के उपाय बताए गए।
- नकारात्मक चिंतन को समाप्त कर सकारात्मक सोच का महत्व बताया।
- आचरण एवं विचारों की शुद्धता द्वारा स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया।
- आध्यात्मिक जागृति और सरकार द्वारा किसानों को दी जा रही सुविधाओं की जानकारी भी दी गई।



चले अभियान से डेढ़ लाख से अधिक किसानों को नशामुक्ति, जैविक-यौगिक खेती का संदेश दिया गया। 20 हजार से अधिक किसानों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया।

क्या है 'शाश्वत यौगिक खेती'...

मनुष्यों की तरह पेड़-पौधे भी हमारे संकल्पों को महसूस करते हैं। वह भी अच्छे-बुरे की प्रतिक्रिया देते हैं। इस पर वर्षों तक शोध करके संस्थान द्वारा 'शाश्वत यौगिक खेती' पद्धति विकसित की गई है। ये बात कई वैज्ञानिक शोधों में भी साबित हो चुकी है। इसमें सिर्फ जैविक खाद का ही उपयोग किया जाता है। साथ ही खेत में बोवनी से पहले बीज को तीन दिन तक परमात्मा की शक्ति से शुभ बाइब्रेशन द्वारा उसे चार्ज करते हैं। बीज को मेडिटेशन कक्ष में रखकर राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से उसमें शुभ संकल्पों की शक्ति भरती है। इसे बीज संस्कार कहा जाता है। इसके बाद बोवनी करते समय परमात्मा की याद में खेत में बोते हैं। बाद में फसल को राजयोग मेडिटेशन के जरिए परमात्मा की किरणों लेकर शुभ प्रकंपन देते हैं। भारतभर में 1100 से अधिक किसान 'शाश्वत यौगिक खेती' कर रहे हैं। इससे वह कम लागत में अधिक उत्पादन ले रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज में इसका प्रशिक्षण निःशुल्क दिया जाता है।

ब्रह्माकुमारीज के तीन जोन द्वारा एक साथ चलाया गया अभियान नुककड़ नाटक, रैली, टॉक-शो, प्रदर्शनी, सेमीनार और कार्यशाला से किसानों को किया जागरूक किसान रथ से किसानों को व्यसन मुक्त बनाने और आध्यात्म अपनाने का दिया संदेश

शिव आमंत्रण टिम मध्यप्रदेश। मध्यप्रदेश शासन के कृषि विभाग और ब्रह्माकुमारीज संस्थान के राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा संयुक्त रूप से मध्यप्रदेश के सभी 52 जिलों में किसान सशक्तिकरण अभियान चलाया गया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज के प्रदेश के अलग-अलग जोनल हैडक्वार्टर द्वारा दिव्य किसान संदेश रथ रवाना किए गए। आध्यात्मिक चित्रों, नशामुक्ति प्रदर्शनी और जैविक-यौगिक खेती का संदेश देते चित्रों के माध्यम से इन रथों को तैयार किया गया। इनके माध्यम से किसान रैली गांव से लेकर कस्बों और तहसील व जिला मुख्यालयों पर निकाली गईं। अभियान में निर्व्यसनी, संयमित जीवन जीने वाले, तपस्वी, बालब्रह्मचारी ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी भाई-बहनों ने किसानों को आध्यात्म पथ की राह अपनाने, नशे के दुष्परिणाम बताकर इससे मुक्त

होने और किसानों को चारित्रिक, पारिवारिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनने की विधि बताई। साथ ही ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास द्वारा विकसित की गई खेती की नई पद्धति 'शाश्वत यौगिक खेती' को अपनाने पर जोर दिया। इसके फायदे बताने से लेकर किसानों को इसका प्रशिक्षण भी दिया गया। अभियान का उद्देश्य किसानों को आत्मनिर्भर बनाना, उनका चारित्रिक विकास कर आर्थिक और सामाजिक विकास करना है। प्रदेशभर के कृषि विभाग से जुड़े वरिष्ठ वैज्ञानिक, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, विकासखंड अधिकारी, ग्राम सेवक, सरपंच और सचिवों को भी विकासखंड स्तर पर कार्यक्रम आयोजित कर 'शाश्वत यौगिक खेती' के बारे में बताया गया। प्रदेशभर में करीब एक माह से अधिक समय

युवा शाश्वत यौगिक खेती को अपनाएं



देश में कई स्थानों पर शाश्वत यौगिक खेती पर किसानों ने वैज्ञानिकों व अनुसंधानकर्ताओं की देखरेख में कई प्रयोग किए हैं। इनके परिणाम अभूतपूर्व रहे हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है यह एक बड़ी क्रांति का आगाज है। शोध में सामने आया है कि सकारात्मक विचारों का प्रभाव फसलों

पर पड़ता है। परमात्मा से प्राप्त शक्ति से उनमें गुणात्मक परिणाम आए हैं। युवा आजीविका की तलाश में नगरों के बजाए खेती पर वापिस लौटें और शाश्वत खेती के प्रयोग को आजमाएं। इससे कम लागत में अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। कई ऐसे युवा हैं जो बड़ी-बड़ी नौकरियां छोड़कर यौगिक खेती सफलतापूर्वक कर रहे हैं। सभी समस्याओं का हल हमारी मनस्थिति और सकारात्मक सोच में निहित है। किसानों के सशक्तिकरण को लेकर पूरे मध्यप्रदेश में मप शासन के कृषि विभाग के साथ संयुक्त रूप से अभियान चलाया गया है। इसके सकारात्मक परिणाम आए हैं।

बीके सरला बहन,

राष्ट्रीय अध्यक्ष, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज

कृषि विश्व विद्यालयों ने भी यौगिक खेती को माना



प्रभाग ने व्यसनमुक्त और आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न सशक्त किसान के माध्यम से संपूर्ण गांवों को पूरी तरह से परिवर्तित करने का सपना संजोया है जो देश में अनेक स्थानों पर सच साबित हो रहा है। कोल्हापुर के कई किसानों ने शाश्वत यौगिक खेती को अपनाया है, इसके परिणाम बहुत ही

अच्छे आए हैं। देश के कई कृषि विश्व विद्यालयों ने भी स्वीकार किया है। केन्द्र सरकार ने भी जैविक-यौगिक खेती के बारे में गंभीरता से विचार करना प्रारंभ किया है। मनुष्य की मनोवृत्तियों में परिवर्तन किए बिना कोई भी उपायों से सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। इसके लिए बाहर की प्रकृति और व्यक्ति की प्रकृति के बीच आध्यात्म के आधार पर सामंजस्य बैठाना होगा। अभियान दल के सदस्य स्वयं निर्व्यसनी, योगी तथा सकारात्मक चिंतन करने वाले हैं।

बीके राजू भाई, उपाध्यक्ष, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज

5485 किसानों ने लिया व्यसनमुक्ति का संकल्प...



भोपाल जोन से पांच अभियान निकाले गए। भोपाल, ग्वालियर, होशंगाबाद और सागर संभाग के 21 जिलों में 17 दिन अभियान चला। इसमें 55 बालब्रह्मचारी यात्रियों ने किसानों को यौगिक खेती, व्यसनमुक्ति और स्वच्छता का संदेश दिया। 335 व्यसनमुक्ति के कार्यक्रमों में 5485 किसानों ने व्यसनमुक्ति का संकल्प लिया। 554 कार्यक्रम शाश्वत यौगिक खेती और 165 कार्यक्रम स्वच्छता अभियान के आयोजित किए गए। 544 गांवों को कवर करते हुए 6132 किमी की दूरी यात्रियों ने तय की। 38 हजार किसानों को यौगिक खेती और व्यसनमुक्ति का संदेश दिया गया।

बीके अवधेश, जोनल निदेशिका, भोपाल जोन, ब्रह्माकुमारीज

6063 किसानों ने लिया 'यौगिक खेती' का संकल्प



इंदौर से अलग-अलग क्षेत्रों के लिए 11 दिव्य किसान संदेश यात्राएं निकाली गईं। इनके माध्यम से 13 जिले की 48 तहसील और 865 ग्रामों को कवर किया गया। इन कार्यक्रमों के माध्यम से 58803 किसानों को लाभ मिला। साथ ही 8101 किसानों ने बहनों के समक्ष व्यसनमुक्ति का संकल्प लिया। 6063 किसानों ने शाश्वत जैविक-यौगिक खेती करने का संकल्प लिया। इसके अलावा कृषि विभाग से जुड़े सभी स्तर के अधिकारियों को भी यौगिक खेती का संदेश दिया गया।

बीके आरती, क्षेत्रीय निदेशिका, इंदौर जोन, ब्रह्माकुमारीज

6 दिव्य किसान संदेश रथ से दिया 21 जिलों में संदेश



जोन से 6 दिव्य किसान संदेश रथ यात्राएं निकाली गईं। 21 जिलों को कवर करते हुए तहसील मुख्यालय, विकासखंड और रास्ते में आने वाले ग्रामों को कवर किया गया। 50 हजार से अधिक किसानों को यौगिक खेती का संदेश दिया गया। हजारों किसानों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया।

बीके हेमलता, मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक, इंदौर जोन, ब्रह्माकुमारीज

भोपाल जोन: एक साथ पांच यात्राएं निकालीं...



शिव आमंत्रण गोपाल जोन। ब्रह्माकुमारीज के भोपाल क्षेत्र से भी किसान सशक्तिकरण अभियान के तहत पांच किसान संदेश रथ निकाले गए। इसके माध्यम से पूरे भोपाल संभाग, ग्वालियर संभाग, होशंगाबाद संभाग और सागर संभाग में गांव से लेकर कस्बों व शहरों में किसानों को नशामुक्त जीवन व यौगिक खेती का संदेश दिया गया। भोपाल क्षेत्र में अभियान को को-ऑर्डिनेटर मुरैना की बीके रेखा बहन ने बताया कि अभियान की शुरुआत मुरैना से की गई। भोपाल जोन की जोनल निदेशिका बीके अवधेश दीदी, ने हरी झंडी दिखाकर दिव्य किसान संदेश रथ और यात्रियों को रवाना किया गया। अभियान के तहत रास्ते में आने वाले ग्रामों को कवर करते हुए कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें विशेष रूप से कृषि विभाग से जुड़े अधिकारियों को भी जोड़ते हुए प्रत्येक जिले के विकासखंड स्तर पर विशेष विशाल कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इंदौर क्षेत्र से एक साथ 11 यात्राएं निकालीं...



शिव आमंत्रण इंदौर जोन। किसान सशक्तिकरण अभियान के तहत दूसरे किसान संदेश रथ का शुभारंभ 21 सितंबर को इंदौर स्थित न्यू पलासिया ओमशांति भवन जोनल सेवाकेंद्र द्वारा लिंबोदी, खंडवा रोड से किया गया। इंदौर जोन से एक साथ 11 किसान संदेश रथ रवाना किए गए। मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान केंद्र के पूर्व निदेशक एचएन पांडे, प्रकाश व्यास, प्रभाग अध्यक्ष बीके सरला दीदी, उपाध्यक्ष बीके राजू भाई ने दीप प्रज्वलित कर किया। एचएन पांडे ने कृषि से जुड़े अपने अनुभव सांझा किए। उन्होंने बताया किसी भी बड़े कार्य को करने के लिए संकल्प शक्ति का होना बेहद जरूरी है। क्योंकि संकल्प रूपी बीज ही एक दिन वास्तविकता में परिणीत होता है। हमें इस बीज को धैर्य और निरंतर प्रयासों के जल से सींचना बहुत आवश्यक है। पूर्व राज्य मंत्री प्रकाश व्यास ने कहा भारतीय कृषि क्या है? कृषि में किन मूल्यों रूपी साधनों की जरूरत है। इस बात पर आज फिर से चिंतन करने की आवश्यकता है। संचालन बिलासपुर से पधारी बीके राखी बहन ने किया।

इंदौर से 6 दिव्य किसान संदेश रथ रवाना...



शिव आमंत्रण इंदौर जोन। ब्रह्माकुमारीज के इंदौर जोनल सेवाकेंद्र द्वारा किसान सशक्तिकरण अभियान की शुरुआत करते हुए 6 दिव्य किसान संदेश रथ हरी झंडी दिखाकर इंदौर क्षेत्र में रवाना किए गए। विभिन्न प्रदेशों से आए बालब्रह्मचारी 72 रथ यात्रियों ने मालवा सहित अन्य जिलों के ग्रामों में एक मास तक किसानों को आंतरिक सशक्तिकरण के साथ सार्थक परिवर्तन के उपाय बताए। यौगिक खेती के फायदों से रूबरू कराया। अभियान का उद्घाटन प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक जीतू जिराती, संस्था के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्ष बीके सरला, उपाध्यक्ष बीके राजू, इंदौर जोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक बीके हेमलता, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. नरेन्द्र धाकड़, उप संचालक कृषि विभाग विजय चौरसिया, वैज्ञानिक डॉ. भारत भूषण शर्मा, पूर्व मंत्री रामेश्वर पटेल, राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ अध्यक्ष शिवकुमार कक्का ने हरी झंडी दिखाकर किया।



अंतर्मन का दीप जलाएं, कुसंस्कारों को भगाएं

दीपावली का पर्व सर्वाधिक खुशी और उमंग उत्साह का पर्व माना जाता है। इसे भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी भारतीय आस्था और प्यार से मनाते हैं। ये पर्व केवल दीप जलाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसके आध्यात्मिक महात्म्य को समझने और मनाने से ही इसका लाभ मिल सकता है। क्योंकि अभी तक जो हम दीप जलाते आए हैं वो केवल एक रस्म बनकर रह गया है। न तो कभी अंधकार दूर हुआ और न ही लक्ष्मी का घर में वास हुआ। मनुष्य के जीवन में जब ज्ञान का दीप जलेगा तो अज्ञान-अंधकार मिटेगा। जब अज्ञान-अंधकार नहीं होगा तब चारों तरफ रोशनी ही रोशनी होगी। अर्थात् जो मनुष्य करेगा, कमाएगा उसमें निःसंदेह लक्ष्मी का ही वास होगा। लोग घरों की सफाई करते हैं इसका अर्थ यही है कि हम अपने मन-मस्तिष्क में फैली गंदगी को साफ कर सच्चे मन से लक्ष्मी का आह्वान करें अर्थात् गुणों को जीवन में उतारें तब जाकर चारों ओर दिवाली होगी। जिस दिन आपके मन में सद्बिचारों, सद्कर्मों और सद्ब्यवहार का दीप जल जाएगा उसी दिन आपके जीवन से अज्ञान-अंधकार कोसों दूर चला जाएगा। जब हम इस ज्ञान प्रकाश को सदा जलाएं रखेंगे तो फिर हमें सदा परमात्म प्यार की रोशनी आलोकित करती रहेगी। जिस दिन हम ये शुरूआत कर देंगे उसी दिन मन के आकाश का दीप जल उठेगा।

बोध कथा जीवन की सीख

अवचेतन मन की शक्ति से दूढ़ सकते हैं किसी भी सवाल का हल

बीसवीं सदी की शुरुआत में वैज्ञानिक नैटन क्यूरी एक ऐसी महिला हुईं जिन्हें नोबेल पुरस्कार मिला। एकमात्र व्यक्ति जिसे दो बार दो अलग-अलग शाखाओं में नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया। वह किसी एक विषय पर तीन साल से काम कर रही थी और उत्तर नहीं मिल रहा था। तीन साल तक बहुत सोच विचार, विजन, लॉजिक, चिंतन किया, किताबें पढ़ी परंतु जो गणित था उसका कोई उत्तर मिल नहीं रहा था। एक दिन वह उसका उत्तर सोचते-सोचते सो गईं और रात में अचानक उठी। उन्हें पता नहीं कि वह कब उठी और एक पेपर पर उसका

तब तक डायबिटीज का कोई इलाज नहीं था। इंसुलिन का पता तो चला था लेकिन वह क्या है, कैसा होता है कोई द्रव्य है पर निकले कहां से किसी को कुछ पता नहीं। वह कनेडियन डॉक्टर एक रात सो रहा था और सोच रहा था। सोते-सोते अचानक एक विचार मन में आया जो बाद में कहता है यह मेरा विचार नहीं था। पर कहां से आ गया उसे आश्चर्य हुआ। पता नहीं मैं सो रहा था या जाग रहा था यह शायद बीच की अवस्था थी। किसी ने उससे कहा मन ही मन संकल्प में कुतों का पेनक्रियाज अगनाशय में शायद यह मिलेगा। उसके साथ मेडिकल स्टूडेंट चार्ल्स डेबिड ने पहली बार इतिहास में

उत्तर नहीं आने पर जब चेतन मन को छोड़ दिया गया तो अवचेतन मन ने अपना काम कर दिया। अवचेतन मन बहुत शक्तिशाली है। जरूरत है तो उसकी शक्ति को उपयोग करनी की।

ये दो घटनाएं हैं जिसमें बड़ी खोज हुई है। खोज कर्ताओं ने यह अनुभव में बताया कि यह खोज हमारे विचार करने से नहीं रात में अचानक मन में विचार आने से हुई है।

दूसरी घटना है वर्ष 1921 में कनाडा का एक डॉक्टर मधुमेह के विषय में सोच रहा था।

संदेश: जीवन में जब कोई विचार, समस्या, परिस्थिति या किसी सवाल का हल नहीं मिल रहा हो तो उसे योग निद्रा से हल ढूढ़ सकते हैं। अवचेतन मन की शक्ति से उसका हल निकाल सकते हैं। जरूरत है तो इसकी शक्ति को पहचानकर उसे सही तरीके से उपयोग करने की। हमारा अवचेतन मन सिर्फ तस्वीरों को ही ग्राहण करता है। इसलिए विजुलाइन करना बहुत जरूरी है।



मेरी कलम से

मेधावी शुक्ला
(अनुसंधान अध्ययता)

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

जीवन की व्यापकता के लिए स्वयं को सम्पूर्ण बना लेने की इच्छा शक्ति जब व्यक्ति के अंदर उत्पन्न हो जाती है तब वह श्रेष्ठता के प्रति समर्पित होने के लिए भागीरथ पुरुषार्थ करना आरंभ कर देता है। स्वयं की मूलभूत प्रवृत्तियों में सुधार करते हुए औपचारिक व्यवहार की आवश्यकता का आंकलन कर अनौपचारिक संबंधों के प्रति विश्वसनीयता को बनाए रखना अहिंसक जीवनशैली का प्रत्यक्ष प्रमाण होता है। सामान्य तौर पर अपनत्व एवं अन्य संबंधों के मध्य अनौपचारिक एवं औपचारिक व्यवहार का प्रचलन होता है लेकिन दोनों ही संबंधों को निभाते हुए मिश्रित व्यवहार की कल्पना धीरे-धीरे साकार होने लगती है। मानवीय आचरण की विभिन्न स्थितियों में विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है निरंतर अपनों के साथ अनौपचारिक व्यवहार करते हुए अधिक मिठास की अनुभूति होती है लेकिन यह भी प्रकट भाव उठता है कि कुछ स्थान पर तो अनौपचारिक ही होना चाहिए अर्थात् सभी स्थितियों में एक ही व्यवहार की स्वीकृति

नहीं मिल पाती है और धीरे-धीरे मनमुटाव बढ़ता चला जाता है। अब यदि जीवन के व्यवहार में अन्य लोगों अर्थात् स्वजन एवं परिजन के अतिरिक्त शेष मनुष्यों से व्यवहार की स्थितियां घटित होती हैं तब अंतःकरण में बचाव पक्ष के भाव उत्पन्न होते हैं जो समय प्रति समय यह अभिव्यक्ति करवाते हैं कि आप बुरा मत मानना मेरे कहने का तात्पर्य वह नहीं है जो आप समझ रहे हैं। किसी व्यक्ति द्वारा व्यवहार करने पर अर्थात् संबंधों के उतार-चढ़ाव की स्थितियों में बुरा मानना या बुरा लगना एक ऐसी सच्चाई है जो स्वयं के भाव एवं कुभाव को वैसे ही अनुभूति कराती है जैसे कहा गया सत्य था क्योंकि सत्य को आवरण अथवा दूसरे तथ्यों एवं मतों से ढकने पर सबकुछ कड़वी सच्चाई के रूप में बाहर आ जाता है जिससे व्यक्ति को हृदय में गहरा आघात लगता है जो अंततः मस्तिष्क में बदला लेने एवं क्षमा कर देने के विचार से संचित हो जाता है और अंततः जीवन की प्रतिकूलता एवं अनुकूलता के समय प्रकट होता है। जीवन में प्रज्ञावान होना सही

विवेकशीलता का परिचायक है। उसके बावजूद भी सामाजिक उन्नयन का परिणाम उस स्थान पर बौना हो जाता है जहां मानव के साथ व्यावहारिक संबंधों की स्थितियां बंधनों की जकड़न को हिंसात्मक परिदृश्य के समतुल्य घटित हो जाती है। मानवीय संबंधों के मध्य कितना कठिन हो जाता है कि अहिंसक जीवनशैली को अपनाया जाए। क्योंकि यह मानव धर्मनिष्ठा का अनुपम उपहार है और मनुष्य की मनुष्यता को बचाने में मददगार भाव है जो व्यवहार की दुहाई से पुनः संरक्षित किया जा सकता है। व्यक्तिगत जीवन की प्रक्रिया में प्रयास एवं पश्चात्ताप से उपजे संताप के साथ अहिंसक जीवनशैली के लिए कार्य करना कठिन होता है। जबकि मानव धर्म के प्रति निष्ठा जागृत करके अपने मनुष्य धर्म के निर्वहन को स्वीकृति प्रदान की जा सकती है। मानव का मानव बने रहना मानव की विजय का प्रतीक है। जबकि मानव का महामानव बन जाना जीवन की उपलब्धि है तथा मानव धर्म निष्ठा का प्रतिपालन अहिंसक जीवनशैली का अनुपम उदाहरण है।



आध्यात्म की नई उड़ान...

डॉ. सचिन | मेडिटेशन एक्सपर्ट

आध्यात्मिक जीवन और ब्रह्मचर्य व्रत वाले व्यक्ति को जीवन में भोजन और नींद के बारे में गहराई से जानकारी होना जरूरी है। इसका महत्व क्या है? कैसे की जाए? अर्थ क्या है? फायदे क्या हैं? क्यों करनी है? किस तरह करनी है? विधि क्या है? और शुरुआत कैसे करें? अच्छी नींद की निशानी है सोने के बाद फ्रेश होकर उठना। एक है नींद से किसी को जबरदस्ती वंचित कर दिया जाए। दूसरा है अनिद्रा। आधा विश्व नींद की दवाइयां खाकर सोता है। नींद से वंचित रहने पर दुःख और मन में अजीबो-गरीब हरकतों के केस दुनिया में सामने आए हैं। वर्ष 1964 में एक 17 साल के किशोर थागार्टनर ने 11 दिन तक जगे रहने का रिकॉर्ड बनाया था। जब उसके मन की स्टडी की गई तो सामने आया कि उसे चक्कर आ रहे थे, दिखाई नहीं दे रहा था। माइंड सामान्य स्थिति में नहीं था। नींद कम होने के घातक परिणाम होते हैं। अमेरिका में दो लाख दुर्घटना की वजह ड्राइवर की नींद की कमी है। रिसर्च में सामने आया है कि पांच में से हर एक ड्राइवर गाड़ी चलाने समय झपकी लेता है।

योग निद्रा एक मनोवैज्ञानिक नींद

साइक्लोजिकल नींद या योग निद्रा क्लिप ऑफ योग। योग निद्रा अर्थात् आध्यात्मिक योग निद्रा। सोते हुए भी योग चालू या सोते-सोते जागना। योग

ब्रेन की है पांच प्रकार की वेव... हमारे ब्रेन की पांच प्रकार की वेव है। डेल्टा वेव, अल्फा, डेल्टा, बीटा और गामा। डेल्टा वेव सबसे गहरी नींद की अवस्था है। सबसे कम एक या दो संकल्प ही चलते हैं। वहीं अल्फा नार्मल अवस्था है। जैसे हम किसी हॉल, सभा या सेमीनार में बैठे होते हैं। बीटा में थोड़े ज्यादा विचार हैं फिर है गामा में सबसे ज्यादा विचार हैं। बीटा वेव शांति, रिलेक्स की अवस्था है। इसमें थोड़े से ज्यादा विचार हैं। सबसे ज्यादा विचार गामा वेव में चलते हैं। इस अवस्था में 30 से ज्यादा विचार चलते हैं। मेडिटेशन में हमारी स्थिति अल्फा वेव की होती है। गहरी नींद में भी हमारे ब्रेन से अल्फा वेव निकलती हैं। ये अवस्था ब्रेन को सबसे सुकून देने वाली होती है।

योग निद्रा की कला जानना सभी के लिए जरूरी

निद्रा अर्थात् जिसमें व्यक्ति न ही सोया है न ही पूरी तरह जागा है बीच में है अर्थात् योग निद्रा। ये एक चमत्कारिक औषधि है। यदि कोई 10 या 15 मिनट ही योग निद्रा कर ले तो 2-3 घंटे की नींद का आराम मिल जाता है। शोध के मुताबिक मनुष्य को नींद की आवश्यकता नहीं है। आराम की आवश्यकता है। आराम पाने के लिए नींद एक साधन है। व्यक्ति जितना सोता है उसका आधा घंटा 2 घंटा टाइम तो उसका सपने में व्यस्त हो गया जो नींद उसे मिलनी चाहिए थी।

नींद दो प्रकार की होती है...

पहला एनआरईएम (नॉन रैपिक आई मूमेंट स्लीप) और दूसरा है आरईएम (रैपिक आई मूमेंट)। मेडिकल साइंस कहता है एनआरईएम सोने से पहले हो जाती है उसको कहा जाता है गहरी नींद और बाद की जो नींद है आरईएम वह सपने वाली होती है। आरईएम अवस्था वाली नींद डरावना होती है। इसमें इतना रेस्ट नहीं मिलता है, जितना एनआरईएम स्टेज में मिलता है।

योगनिद्रा पर हुए हैं कई प्रयोग...

योगनिद्रा पर इस सदी में बहुत सारे प्रयोग किए गए हैं। आध्यात्मिक जीवन में यदि हर एक व्यक्ति इस कला में निपुण हो जाए तो रात की नींद पावरफुल होगी और कम समय में ही बहुत शक्तिशाली होगी। इससे थकान खत्म हो जाएगी। थकान, डिप्रेशन

और बहुत सारी बीमारियों का इलाज योगनिद्रा में है। बहुत सारे संकल्पों को भी इससे साकार किया जा सकता है। ऐसी आदतें जिसे हम छोड़ना चाहते हैं फिर भी नहीं छोड़ पा रहे हैं। बहुत सारे संस्कार भी इससे छोड़ सकते हैं। कई खिलाड़ियों ने योग निद्रा का प्रयोग कर मन चाही सफलता पाई है।

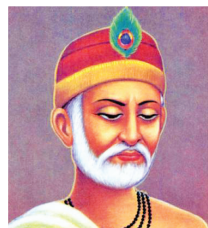
योग निद्रा के उदाहरण...

एक बार भारत से एक योगी भाषण देने इटली गया। उसे इटली भाषा नहीं आती थी लेकिन योग निद्रा में एक्सपर्ट था। उसने भाषण इंग्लिश में लिखा और वहां के स्टूडेंट जो इटालियन भाषा जानता था उसको दे वह भाषण दे दिया और वह खुद सो गया और खरॉटे मारने लगा। इस दौरान वह स्टूडेंट इटालियन भाषा में एक घंटा तक भाषण पढ़ता रहा। उठने के बाद वह योगी उस स्टूडेंट के सामने गए और वही भाषण एक घंटे तक इटालियन भाषा में सुना दी। क्योंकि योग निद्रा में नई भाषा को योगी के ब्रेन ने पकड़ लिया था। इसी तरह आधी रात को ब्रह्मा बाबा के कमरे में कोई जाता था तो बाबा उठकर पूछते थे कि बच्चे क्या चाहिए। बाबा भी योगनिद्रा में सोते थे। स्वप्न भी सोने और जागने के बीच की व्यवस्था है। विदेश में इस पर बहुत रिसर्च हो रहे हैं और कॉम्रेड्री तैयार की जा रही है। इसके परिणाम चौकाने वाले आए हैं।

..... अगले अंक में आप जानेंगे इसकी विधि क्या है, इसकी पूरी प्रक्रिया



प्रेरक
विचार
Spiritual
THOUGHTS



संत कबीर दास, महान कवि

“ खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने का क्या लाभ, जो न ठीक से किसी को छांव दे पाता है और न ही उसके फल सुलभ होते हैं ”



माखनलाल चतुर्वेदी, महान लेखक

“ मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक! मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ पर जावें वीर अनेक! ”

जीवन प्रबंधन



बी.के. शिवानी

जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ

अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी ऑडिऑन, गुरुग्राम, हरियाणा

ऐसे में सलाह देते वक्त बहुत ध्यान देने की जरूरत है। जो आपसे सलाह ले रहा है वह अपनी बातों की जिम्मेवारी नहीं लेना चाहते हैं इसलिए वो आपसे पूछते हैं। लेकिन कल जब वह भाव्य आगा तो वे आपको ही जिम्मेवार ठहराएंगे। इतना ही नहीं इसके लिए वे हमें जीवनभर विपरीत एनर्जी देते रहेंगे। जिससे मुझ आत्मा की शक्ति घटती जाएगी। यदि सामने वाला राय मांगे भी तो आप कहें आपको जो सही लगता है वही करिए। वो बार-बार पूछेंगे नहीं आप बताओ, आप बताओ। तो बोलो नहीं आपको जो सही लगता है, वही सही होगा। ऐसा करने से सामने वालों की निर्णय शक्ति बढ़ती है। हमें लोगों को निर्णय देकर उनके कर्मों में लटकना नहीं है। अपना निर्णय लेने की शक्ति को बढ़ाना है। जब परखने की शक्ति बढ़ेगी तो निर्णय शक्ति भी बढ़ जाएगी। जब ये सब होगा तो एक बहुत सुंदर शक्ति हमारी अंदर आ जाएगी, उसे कहते हैं सहयोग करने की शक्ति।

अच्छी सोच व कर्म सबसे बड़ा सहयोग...

अच्छा सोचना ये हर एक का सबसे बड़ा सहयोग है। सभी से मीठा बोलना, प्यार से बोलना, दुआएं देकर बोलना, आशीर्वाद देकर बोलना, ये सबसे बड़ा आशीर्वाद है। हर कर्म सही करना यह सबसे बड़ा सहयोग है। इस कलियुग रूपी सृष्टि को अब सतयुग बनाना है। इस कार्य में सबका सहयोग चाहिए। सतयुग मतलब जहां आत्मा पवित्र, शरीर निरोगी और सतोप्रधान प्रकृति। जब मैं आत्मा अपने अंदर देवताई गुण और शक्तियों का आह्वान करे तो सतयुगी दुनिया बनेगी।

अपने अंदर के रावण को जलाएं...

नवरात्रि में हम नौ दिन जागरण, व्रत करते हैं और देवी का आह्वान करते हैं। जागरण करना मतलब अज्ञान की नींद में हम सोए हुए हैं उससे जागरण करना। कौन सी अज्ञान की नींद सोए हुए हैं। मैं कौन? ये ही नहीं पता। कहां से आए? किसके हैं? कहां जाना है? यही नहीं पता। यहां इतने उलझ गए इस दुनिया को ही अपना मान लिया और गलत कर्म करने लग गए। अज्ञान की नींद से जागरण करना यानी मैं शरीर नहीं, इस शरीर को चलाने वाली आत्मा हूँ। मेरे संस्कार और कर्म मेरे साथ जाने वाला है। इसके प्रति सदा जागृत रहना कि मुझे सदा श्रेष्ठ कर्म ही करना है। अभी तक हम रावण को बाहर ही जलाते आए हैं। आज हम सभी एक व्रत करते हैं आज से अपने अंदर के रावण को जलाते हैं। हर साल देवी का भी बाहर से आह्वान करते आए हैं। इस बार हम अपने अंदर से आह्वान करते हैं। नौ दिन तक अपने अंदर दिव्यता और शक्ति का आह्वान करेंगे तो अपने अंदर का रावण दसवें दिन मर जाएगा। रावण के दस सिर, दस विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, नफरत और झूठ) हैं। इन्हें खत्म करना है, रावण स्वतः खत्म हो जाएगा। आज से हम व्रत करते हैं कि शब्दों क्या, संकल्पों में भी गुस्सा नहीं करेंगे। हां, जी क्या राय है करें? करें नहीं करें? पावर तो हम सबके पास है लेकिन निर्णय सिर्फ मुझे लेना होता है कि मुझे करना है। मुझे रावण को जलाना ही है। सामने वाला यदि अपने रावण को न जलाए तो इसका मतलब ये नहीं कि हम अपने अंदर के रावण को जगा देंगे। अपने अंदर देवी जगाना है। ये चर्चाइस आपकी है।

देवी-देवता मतलब सदा देने वाले...

सतयुग आना मतलब अपने अंदर के रावण को खत्म करना और देवताई गुण को जगाना। जब हम ये करेंगे तो सृष्टि पर दीवाली आएगी। एक आत्मा देवी गुण धारण करेगी तो उसे देख दूसरी आत्मा अपनाएगी और देखते ही देखते दीया जलता जाएगा। दीया मतलब अपने अंदर की दिव्यता भरी और सब को दिया-दिया। इसलिए दीया जलाते हैं। देने वालों को देवी-देवता कहा जाता है। आत्मा जब अपने अंदर की दिव्यता (डिविनिटी) को मर्ज करेगी तो सृष्टि पर कलियुग आएगा और अपने अंदर की दिव्यता को इमर्ज करेगी तो सतयुग आएगा। इसलिए कलियुग में सत्यनारायण की कथा करते हैं कि नर ऐसी करणी करे जो नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनें। जब अपने अंदर के रावण को खत्म कर देवी शक्ति को इमर्ज करेंगे तो श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण बनेंगे। सारा दिन सबके सामने खड़े होकर ये नहीं कहना है कि मुझे सम्मान दो, रिस्पेक्ट दो, अच्छा बोलो, समझो, प्यार दो। कलियुग मतलब ऐसे भिखारियों की तरह खड़े होते हैं। सतयुग मतलब देने वाले देवी-देवताओं की तरह उनके हाथ देते हुए। देने वालों के सामने जो भी आए सबको बराबर देना है।

सतयुगी कर्म से आएगा सतयुगी संसार...

अब सृष्टि परिवर्तन का समय है। नई दुनिया आ रही। इसलिए नवरात्रि कहा जाता है। रात्रि मतलब- तब जब सृष्टि पर रात्रि है। तभी दिव्यता गुण का आह्वान होगा। सुबह के बाद दोपहर, शाम और रात होती है फिर सबेरा होता है। इसी तरह सृष्टि पर पहले सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और अभी कलियुग आया है। अब हम सभी को सतयुगी कर्म करके, सतयुगी संसार लाना है। जैसा संस्कार, वैसा संसार। कलियुग से सतयुग के इस परिवर्तन में परमात्मा शिव निराकार इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं। परमात्मा खुद आते हैं। ज्ञान देने के लिए और उस परमात्मा शिव से जो आत्मा कनेक्ट होती है, वह शिव की शक्ति है। हम सब हैं शिव की शक्ति। इस दीवाली अपने जीवन को परमानेंट सुंदर बनाना है। सिर्फ दो दिन की दीवाली नहीं मनाना है।



डॉ. अजय शुक्ला | बिहेवियर साइंटिस्ट

गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल इयुमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर (स्पीच)अल रिसर्च सेंटी पीस फंडिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

मानवीय चेतना का समृद्धशाली पक्ष

जीवन का

मनोविज्ञान- 04

व्यक्तिगत जीवन में स्वयं के प्रति अपनाई जाने वाली सजगता एवं सतर्कता आत्मा को सजाने एवं संवारने में सदा मददगार होती है। मानवीय चेतना का गौरवमयी स्वरूप उस समय समृद्धशाली बन जाता है जब वह स्वयं के उत्थान एवं कल्याण में भागीदारी करने की नीयत से कार्य करना आरंभ करता है। स्वयं को उंचा उठाने के लिए आत्मा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शक्ति मन से किए जाने वाले संवाद को अत्यधिक गहराई से समझने की आवश्यकता होती है, जिससे बुद्धि के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण हो जाए और मनुष्य की बुद्धि, मन को सही निर्णय लेने के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन एवं परामर्श दे सके। मानवीय चेतना का समृद्धशाली पक्ष इतना बेहतरीन होता है कि वह मन और बुद्धि के बीच हुए श्रेष्ठ तालमेल को स्वीकार करते हुए अपने पवित्र संस्कारों से आभार व्यक्त कर देता है।

श्रेष्ठ चिंतन के प्रति दायित्व बोध

मानवीय चेतना में जब मानव धर्म के प्रति निष्ठा का स्वरूप विकसित होता है तब श्रेष्ठ चिंतन के प्रति एक सार्थक दायित्व बोध उमड़ता है जो इस बात की अनुभूति कराता है कि यह मनुष्य जीवन श्रेष्ठता की ओर



बढ़ जाने के लिए ही प्राप्त हुआ है। अब प्रश्न उठता है कि जीवन के व्यापक परिदृश्य में स्वयं के प्रति इतना अधिक चेतना से युक्त होकर कार्य व्यवहार किया जा सकता है और यदि हां तो कैसे? किसी भी व्यक्ति के जीवन में चेतना का परिष्कार नैसर्गिक रूप से होता है। जिसे सद्भाव की जागृति के आधार पर स्वीकार करते हुए अनुभव किया जा सकता है। व्यक्ति के द्वारा स्वयं पर कार्य करना उसकी निजी स्वतंत्रता का परिणाम होता है। क्योंकि मानव व्यवहार की गरिमा सर्वप्रथम स्वयं से संचालित होती है जिसका व्यावहारिक स्वरूप परमार्थिक अहिंसा के रूप में परिलक्षित होता है जो आत्मा की पवित्रता को बनाए रखने में श्रेष्ठ, शुभ एवं पवित्र विचार को महत्व प्रदान करता है।

कर्म जगत के परिष्कार में निजी योगदान

जीवन की गतिशीलता में जब स्वयं की कर्म कहानी को परिष्कृत करने की स्थितियां निर्मित होती हैं तब मन, बुद्धि एवं संस्कार के बीच जो द्वंद उत्पन्न होता है वह व्यक्ति को अनेक प्रकार की उलझन में डाल देता है। यदि व्यक्ति स्वयं को परिवर्तन के लिए अन्तःकरण से तैयार कर लेता है और वह धीरे-धीरे आत्मबल के प्रति निष्ठवान हो जाता है तब उसे अहसास होता है कि उसने स्वयं के परिष्कार के लिए किस प्रकार से निजी योगदान दिया है। सामान्य जीवन में स्वयं के द्वारा सर्व मानव आत्माओं को विचार एवं भावनाओं से सुख देने की प्रवृत्ति विकसित कर लेना अहिंसक जीवन का श्रेष्ठतम परिणाम होता है। स्वयं के लिए सदा विचार एवं भावना की पवित्रता को बनाए रखकर अपने आप से व्यवहार करना परमार्थिक अहिंसा अर्थात् सूक्ष्म पवित्रता से स्वयं का संरक्षण एवं परिमार्जन करने के समान होता है।

संस्कारों के उन्नयन की जवाबदेही

मनुष्य जीवन में स्वयं के प्रति सम्मान अर्जित करने के लिए व्यक्ति को अपने संस्कारों को श्रेष्ठता के शिखर पर पहुंचाना आवश्यक होता है और इसका आरंभ पूर्व में परिवर्तन एवं परिवर्धन की प्रक्रिया द्वारा सुनिश्चित होता है। स्वयं का मूल्यांकन जब व्यक्ति सकारात्मक दृष्टिकोण से करने का प्रयास करता है तब उसे पता चलता है कि आत्मा की शक्तियों एवं गुणों के रहस्य कितने गहरे हैं तथा वह मनुष्य से इसी जीवन में श्रेष्ठतम एवं महानतम कार्यों का संपादन अत्यंत कुशलता से करवा सकते हैं। व्यक्ति जब जीवन को प्रभु की अनुपम धरोहर मानकर स्वीकार कर लेता है तब वह स्वयं के सम्मान की गरिमा एवं स्वयं से अनेकानेक आत्माओं के प्रति शुभकामना एवं शुभभावना के दृष्टिकोण को विकसित कर पाता है। स्वयं के मंगल स्वरूप की अभिव्यक्ति पूजनीय संस्कारों के उत्कर्ष द्वारा पूर्णता को प्राप्त होती है जो अतीत के संदर्भों में महामानव के स्वरूप द्वारा आज भी दृष्टिगोचर होते हैं, जिनके परिदृश्य में स्वयं के संस्कारगत उन्नयन की जवाबदेही सन्निहित रहती है।

यदि कोई राय मांगे तो उसे खुद निर्णय लेने के लिए करें प्रेरित अपने अंदर के रावण को जलाएं और दैवी गुणों का आह्वान करें

आत्मा जब अपने अंदर की दिव्यता को मर्ज करेगी तो सृष्टि पर कलियुग आएगा और दिव्यता इमर्ज करेगी तो सतयुग आएगा

शिव आमंत्रण माउंट आबू। आजकल सही-गलत की डेफिनेशन (परिभाषा) बदली हुई। जो कुछ साल पहले तर्क गलत और पाप माना जाता था, उसे अब नार्मल बोल देते हैं। जो काम कुछ साल पहले छिप-छिप कर करते थे वो अब सबके सामने करते हैं। कहते हैं इसमें क्या गलत बात है। जब परखने की शक्ति होगी, तभी सही-गलत का निर्णय ले पाएंगे। निर्णय लेने की शक्ति, कभी किसी और से जाकर नहीं पूछना कि मुझे क्या करना चाहिए। अगर आपके पास कोई आकर पूछे कि आपको क्या लगता है मुझे क्या करना चाहिए? तो जल्दी से किसी को राय नहीं देना है। बहुत गहरी कार्मिक अकाउंट बन जाता है। आजकल लोग आकर आसानी से पूछ लेते हैं कि आपको क्या लगता मुझे क्या करना चाहिए? हम समझते वाह! मुझसे भी लोग राय लेते हैं। हम फटाफट राय दे देते हैं। यदि वही राय अपने घर में इम्प्लीमेंट (लागू) करनी होती है तो निर्णय लेने में महीनों बीत जाते हैं। लेकिन दूसरे को देने में दस सेकेंड कहेंगे। इसमें क्या बड़ी बात है ऐसे करो। हमने किसी को राय दी तो वह राय वह आत्मा अपने अनुसार करेगी। यदि उस आत्मा के पास उस राय को लागू करने के वो संस्कार नहीं हैं और यदि उसने कुछ गलती की तो उसके परिणाम का भागीदार हम भी बनते हैं। क्योंकि हमने राय दी थी। निर्णय लेने की शक्ति हर आत्मा की अपनी होनी चाहिए। क्योंकि उस राय का पालन खुद को करना है। आप किसी को राय दें कि रोज पांच किमी पैदल चलना चाहिए। सेहत के लिए बहुत अच्छा होता है। राय अच्छी बहुत अच्छी है। आपने राय क्यों दी क्योंकि आप चल सकते हैं। लेकिन राय देते हुए ये नहीं चेक किया कि सामने वाला चल सकता है या नहीं। यदि सामने वाले ने हमारी राय मानकर निर्णय ले लिया और पांच किमी चला भी। लेकिन वह गिर गया चोट लग गई तो उस कर्म का भागीदार राय देने वाला भी होगा। कोई आपसे पूछता है क्या करूं। यह नौकरी करूं या नहीं। इधर रहूं या छोड़ दूं। घर बदलूं या नहीं। शादी करूं या नहीं? बहुत बड़ी-बड़ी बातें पूछते हैं।

आत्मा में हैं अष्ट शक्तियां...

- * आत्मा में अष्ट शक्तियां हैं। पहली है विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति। सबसे पहले अपने आप को सुरक्षित करना है यानी सामने वाले की एनर्जी के साथ उलझना नहीं है। किसी को क्षमा करना है, किसी से क्षमा मांग लेना है।
- * दूसरी है समेटने की शक्ति। मैं आत्मा रेडी हूं। कोई भी छण मृत्यु आ जाए मैं आत्मा छोड़ने के लिए तैयार हूं। आत्मा अपने साथ ऐसे संस्कार लेकर जाए कि जहां बच्चा पैदा हो और पंडित जी कहें वया भाग्य लेकर आई है ये आत्मा।
- * तीसरा है सहन शक्ति। रोज अपने आप से कहना है मेरे पास किसी भी बात को, किसी के व्यवहार को, किसी के किसी भी तरह के संस्कार को सहन करने की शक्ति मुझ आत्मा के पास है। मैं दिव्य शक्तिशाली सतयुगी आत्मा हूं।
- * चौथा है समाने की शक्ति। सदा फुल स्टॉप। कभी भी फोन से, मुख से, मन से किसी को भी नकारात्मकता फैलाना नहीं है। जब सही समाने की शक्ति होगी तो सही-गलत परखने की शक्ति, सही निर्णय लेने की शक्ति, सामना करने की शक्ति और सहयोग शक्ति आ जाएगी। ये अष्ट शक्तियां प्रत्येक आत्मा के अंदर हैं, जरूरत इन्हें जगाने की है।



रियल लाइफ

...और उपद्रवियों ने लगा दी लाखा भवन को आग प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

संस्थापक

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया... जीवन को पलटने वाली अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमशः

क्रोध एक ऐसी अग्नि है, जब यह धधकती है तो लोग संपत्ति और संस्थाओं को भी जलाने के लिए लपक पड़ते हैं। जब लोगों ने देखा कि यह कन्याएं-माताएं सत्संग में जाने से नहीं रुकती तो उन्होंने सोचा कि जिस भवन में जाकर ये ज्ञानामृत पीती हैं, क्यों न उसे ही धूल धुसरित कर दिया जाए। एक दिन जब बाबा सत्संग भवन (जोकि लखीराज भवन के नाम से भी जाना जाता था) में उपस्थित नहीं थे। तो विरोधी लोगों व असामाजिक तत्वों ने अवसर जानकर आक्रमण कर दिया। उन्होंने लखीराज भवन को चारों ओर से घेर लिया और दरवाजे, खिड़कियां तोड़ने लगे। भीतर भी घुसने की भी कोशिश की, परंतु शिव की शक्ति सेना खड़ी हो गई और किसी को भी अंदर घुसने नहीं दिया। उन लोगों ने मकान को आग लगा दी। क्रोध के वश हुए उनकी बुद्धि इतनी मारी गई थी कि यह भी नहीं सोचा कि हमारी ही कन्याएं-माताएं, बहू-बेटियां अंदर हैं। भवन को आग लगाने के परिणामस्वरूप वे भी अंदर ही जीते-जी जल जाएंगी। जिन मुखी लोगों ने जनता को भड़काया था, वे न तो उन उपद्रवियों पर कंट्रोल कर सके, न ही इसके परिणाम को सोच सके। इस दौरान किसी दर्शक ने पुलिस को फोन पर सूचना दे दी। पुलिस ने पहुंचकर फायर ब्रिगेड से आग बुझा दी। कहावत है जाखो राखे साइयां, मार न सके कोय, बाल न बांका कर सके चाहे सौ जग बैरी होय। लोगों ने हजार कोशिशें की परंतु वे कुछ भी बिगाड़ न सके। इतना सब होने पर भी बाबा सदा निश्चित, अडोल और साक्षी अवस्था में रहते थे। वे कहा करते थे कि हम तो परमपिता परमात्मा के सेवक हैं। वही सब बात ठीक कर देगा। धर्म के मार्ग पर ये परीक्षाएं तो आती हैं परंतु हमें इस निश्चय में स्थित रहना चाहिए कि सच की बेड़ी डोलती है, डूबती नहीं है। उनके इस शांत और निश्चित जीवन से प्रेरणा लेकर और सत्यता के आधार पर अडिग रहकर अन्य सभी माताएं-बहनें तथा भाई भी ईश्वरीय मस्ती में मस्त

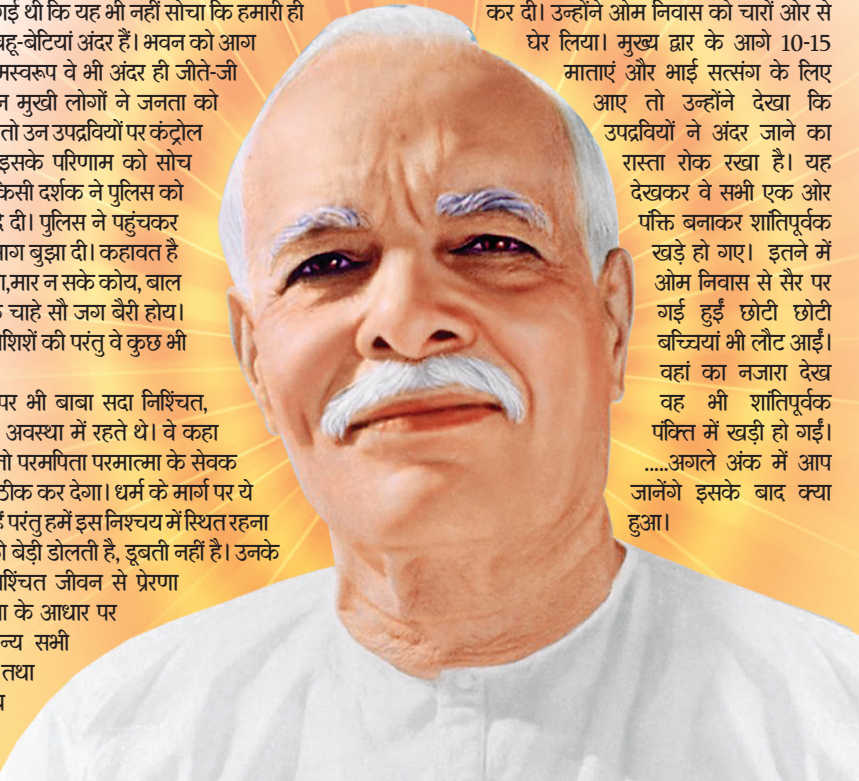
रहते थे। वे साक्षी होकर इस नाटक को देखते। लोगों ने लखीराज भवन पर इतने पत्थर फेंके, शीशें भी तोड़ दिए, दरवाजे भी उखाड़ दिए और हंगामा किया परंतु माताएं-बहनें भयभीत नहीं हुईं। बल्कि इन सब घटनाओं का फल यह हुआ कि संसार से उनका जो थोड़ा-बहुत सा अनुराग रहा था, वह भी टूटता गया। इसे देखकर उन्हें हर्ष भी हुआ कि आज हम इन लोगों से अपनी धारणाओं में काफी आगे निकल गई हैं। अब लोक-लाज तथा भय को जीतने के लिए प्रैक्टिकल शिक्षा हमें मिल रही है। इसके अतिरिक्त लोगों की अशांत अवस्था को देखकर उनके मन में करुणा भी जागृत होती।

ऊं निवास के बाहर पिकेटिंग...

अब इस भवन से स्थानांतरित होकर सभी कन्याएं-माताएं तथा भाई ओम निवास बिल्डिंग में चले गए। ओम मंडली का सत्संग आदि सभी वहीं होने लगा। बच्चों-बच्चियों को भी लौकिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा वहीं मिलने लगी। अब एंटी ओम मंडली ने ओम निवास के बाहर अपना आंदोलन शुरू कर दिया। ब्रह्माकुमारी शांतामणि दादी, जोकि शांतिवन आबू रोड की इंचार्ज थी ने लिखा-एक दिन सुबह 5:30 बजे ओम निवास में रहने वाली छोटी-छोटी बच्चियां यूनिफॉर्म पहने हुए अपनी शिक्षिकाओं के साथ बस में घूमने के लिए गई थीं। तब सल्लाटा छाया हुआ था। उस समय से थोड़ा ही बाद पंचायत के मुखी लोगों ने अन्य अपद्रवी लोगों के साथ, जिनमें कुछ महिलाएं भी थी, पिकेटिंग (7 अगस्त 1938) कर दी। उन्होंने ओम निवास को चारों ओर से घेर लिया। मुख्य द्वार के आगे 10-15 माताएं और भाई सत्संग के लिए आए तो उन्होंने देखा कि उपद्रवियों ने अंदर जाने का रास्ता रोक रखा है। यह देखकर वे सभी एक ओर पंक्ति बनाकर शांतिपूर्वक खड़े हो गए। इतने में ओम निवास से सैर पर गई हुई छोटी छोटी बच्चियां भी लौट आईं। वहां का नजारा देख वह भी शांतिपूर्वक पंक्ति में खड़ी हो गईं।अगले अंक में आप जानेंगे इसके बाद क्या हुआ।



पिछले अंक में आपने जाना कि सत्संग में आने वाली माताओं-कन्याओं के साथ परिजन किस हद तक अन्याय, अत्याचार करते थे, लेकिन उनके इरादे कभी नहीं डिगेंगे, आध्यात्म के मार्ग पर वह आगे बढ़ती रहें।



राजयोग से गुस्सा हुआ शांत, सोचने का नजरिया बदला...



बीके उर्वशी
शिक्षिका, रत्नलाम, मप्र

जब से मैंने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास शुरू किया है मेरे सोचने का नजरिया पूरी तरह से बदल गया है। पहले जहां छोटी-छोटी बात पर गुस्सा आ जाता था, वहीं अब शांत रहती हूँ। वास्तव में राजयोग हमें अंदर से मजबूत और सशक्त बनाता है। युवाओं को राजयोग मेडिटेशन जरूर सीखना चाहिए क्योंकि राजयोग एक ऐसी विधि है जिससे हमारे सोचने, समझने, निर्णय लेने की शक्ति बढ़ती है। आज के इस प्रतिस्पर्द्धा के युग में तनाव होना आम बात है लेकिन राजयोग से हम हर बात को साक्षी भाव से लेना सीख जाते हैं। हमें सही मायनों में जीवन जीने की कला आ जाती है। राजयोग हमें कर्म सन्यास नहीं बल्कि कर्मयोग सिखाता है। तनाव के दौर से गुजर रहे युवाओं को आज इसकी बहुत जरूरत है।

खुद को गहराई से जानने-समझने का मार्ग है आध्यात्म



बीके ममता
परिचारिका (नर्स),
भोपाल, मप्र

ज्यादातर युवाओं में आजकल एक धारणा बन गई है कि धर्म-आध्यात्म से जुड़ना बुजुर्ग लोगों का काम है। जवानी तो मौज करने के लिए होती है। मेरा अनुभव है कि यदि आपको अपना कैरियर बनाना है, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता पाना है और तनाव से मुक्त रहना है तो राजयोग मेडिटेशन आपकी जिंदगी में संजीवनी बूटी का काम करेगा। क्योंकि राजयोग अंतर्जगत की एक ऐसी यात्रा से जो सिर्फ आपको अकेले ही पूर्ण करता है। जब हम मेडिटेशन करते हैं तो अपनी कमी-कमजोरियों, नकारात्मक भावों, कमजोर विचारों, बुरी भावनाओं को जानना-समझना आसान हो जाता है। राजयोग से हमें पता चलता है कि सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। मेरे कैरियर और सफलता का राज राजयोग मेडिटेशन ही है। इससे अब मैं पहले से ज्यादा खुश रहती हूँ। काम के दौरान तनाव भी नहीं होता है। आप भी प्रयोग करके देखें।

वर्ड्स ऑफ ब्रह्माकुमारिज

इस कॉलम के माध्यम से हर बार हम आपको ब्रह्माकुमारीज के वर्ड्स के बारे में रूबरू कराएंगे। इस बार आप जानेंगे रक्षाबंधन के पावन पर्व के उपलक्ष्य में बनाई गई विश्व की सबसे बड़ी राखी और 3-डी हार्टकेयर तकनीक के जनक डॉ. सतीश गुप्ता को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया...

अमन-चैन और भाईचारा का संदेश देने के लिए बनाई विश्व की सबसे बड़ी रंगोली, गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज



शिव आमंत्रण अहमदनगर। 26 नवंबर को मुंबई में शहीद हुए लोगों की दूसरी बरसी पर वर्ष 2010 में दुनिया की सबसे बड़ी रंगोली बनाई गई। ब्रह्माकुमारीज के युवा प्रभाग द्वारा इसके माध्यम से पूरे विश्व में अमन, चैन तथा भाईचारा को बढ़ावा का संदेश दिया गया। रंगोली महाराष्ट्र के अहमदनगर स्थित अशोक भाऊ फिरोदिया स्कूल ग्राउंड में बनाई गई। इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड और एशिया बुक ऑफ रिकार्ड में शामिल किया गया। रंगोली को शहीदों के नाम समर्पित किया गया। इसे बनाने में संस्थान से जुड़े बाल ब्रह्मचारी भाई-बहनों ने अपना सराहनीय योगदान दिया। साथ ही रचनात्मकता दिखाते हुए भारत के चित्र को उकेरने के साथ चिड़िया को दर्शाया गया, जिससे विश्व एकता, विश्व शांति और सर्वधर्म समभाव का संदेश दिया गया।

थ्रीडी हार्टकेयर तकनीक के जनक डॉ. सतीश गुप्ता को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. कलाम ने लाइफ लाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा



शिव आमंत्रण नई दिल्ली। थ्रीडी हार्टकेयर तकनीक के जनक ब्रह्माकुमारीज के डॉ. सतीश गुप्ता को 26 सितंबर 2006 को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। उन्हें यह पुरस्कार तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने प्रदान कर सम्मानित किया। इसके अलावा 22 सितंबर 2008 को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील एवं 14 सितंबर 2012 को त्रिपुरा के राज्यपाल ने भी डॉ. गुप्ता को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड देकर सम्मानित किया। बता दें कि डॉ. गुप्ता अब तक बिना ऑपरेशन के 8 हजार से अधिक हृदय रोगियों को ठीक कर चुके हैं। हृदय रोगियों के लिए आपके द्वारा साल में चार बार कैंप लगाकर प्रशिक्षण दिया जाता है।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में... पढ़ते रहिए शिव आमंत्रण।





जेल से जन्त की ओर... वाराणसी की जेल में बदलाव की शंखनाद केंद्रीय कारागार 'शिवपुर' बना शिवालय, बंदी लगाते हैं ध्यान

ब्रह्माकुमारी संस्थान के प्रयास लाए रंग



ब्रह्ममूर्त से ही बंदी रम जाते हैं शिव के ध्यान में

60-70

कैदी रोजाना ब्रह्ममूर्त से रम जाते हैं परमात्मा की याद में

2006

में कारागार में राजयोग प्रशिक्षण केंद्र की शुरुआत

आध्यात्म से बंदियों की हुई सकारात्मक सोच, चिंता छोड़ आत्मचिंतन में गुजार रहे समय, जेल में रोजाना होता है सत्संग

शिव आमंत्रण शिवपुर/वाराणसी (उप्र)। वाराणसी के शिवपुर केंद्रीय कारागार में बंदियों को ऐसी लगन लगी है कि वह सुबह 4 बजे से ब्रह्ममूर्त में शिव के ध्यान में रम जाते हैं। 4 बजे ही कारागार में शिव साधना के गीतों की मधुर झंकार गूंजे लगती है। इन बंदियों में आत्म चिंतन और परमात्म चिंतन के प्रति लगन का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है जिनके दिन की शुरुआत सुबह 6-7 बजे होती थी अब ब्रह्ममूर्त में 3.30 से 4 बजे से हो जाती है। उठते ही बंदी हाथ-मुंह धोकर परमात्मा के ध्यान में मगन हो जाते हैं। रोजाना ब्रह्ममूर्त में 45 मिनट से लेकर एक घंटा मेडिटेशन करना अब इनकी दिनचर्या बन गया है। यही कारण है कि इनके चेहरों पर जहां पहले आत्मग्लानि और पश्चाताप के भाव रहते थे वहीं अब आत्म संतुष्टि और आत्मसम्मान साफ देखा जा सकता

है। चेहरों की रंग साफ बता देती है कि कुछ पाया है। राजयोग मेडिटेशन का ही कमाल है जो इनके विचारों में सकारात्मक और श्रेष्ठता की झलक के साथ कर्मों में सच्चाई-सफाई देखी जा सकती है। जेल में आए इस सकारात्मक बदलाव को लेकर जेल प्रबंधन का कहना है कि ये सब ब्रह्माकुमारी संस्थान के भाई-बहनों की अथक मेहनत, लगन और समर्पण भाव से ही संभव हो पाया है। जेल में जहां पहले बंदियों में आपस में विवाद होना आम बात थी वहीं अब सभी प्रेमपूर्वक रहते हैं। साथ ही साफ-सफाई की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। इसमें उग्र क्षेत्र के सेवाकेंद्रों की संचालिका राजयोगिनी बीके सुरेन्द्र दीदी, बीके दीपेन्द्र भाई, बीके विपिन भाई का सराहनीय योगदान रहा। साथ ही विभिन्न सेवाकेंद्रों की प्रभारी बहनें बीके मधु बहन, बीके चंदा बहन, बीके वंदना बहन, बीके सरोज बहन, बीके दुर्गा बहन के साथ बीके रामगोविंद, बीके राजकुमार, बीके अशोक और बीके सत्यनारायण का भी जेल की सेवाओं के सुचारु संचालन में विशेष सराहनीय योगदान रहा।

02

दर्जन से अधिक अपराधियों ने अपनाई राजयोग की राह

04

बजे ब्रह्ममूर्त से लगाते हैं ध्यान

12

साल से केंद्रीय कारागार में आध्यात्मिक सत्संग और राजयोग मेडिटेशन जारी

शुरुआत में तनावपूर्ण था माहौल...

केंद्रीय कारागार में राजयोग प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना ऐसे समय में की गई थी जब जेल में ही एक कुख्यात बाहुबली की हत्या किसी बंदी ने कर दी थी। ऐसे में जेल का माहौल तनावपूर्ण हो गया था। ऐसी स्थिति में जेल संचालने के लिए गोरखपुर जेल में पदस्थ वरिष्ठ जेल अधीक्षक वीके जैन को यहां स्थानांतरित किया गया था। जेल अधीक्षक जैन ने अपने अनुभव, कुशल प्रबंधन से जेल को संभाला और वर्ष 2006 में ब्रह्माकुमारी के भाई-बहनों के साथ मिलकर राजयोग प्रशिक्षण केंद्र की नींव रखी। इसके पूर्व वह गोरखपुर में भी राजयोग केंद्र शुरू करा चुके थे, जिसके परिणाम बहुत ही संतोषजनक रहे और जेल का माहौल पूरी तरह से बदल गया था।

60-70 बंदी रोज लगाते हैं ध्यान...

पिछले 12 साल से चल रहे राजयोग प्रशिक्षण का लाभ अब तक सैकड़ों बंदियों को मिला है। दो दर्जन से अधिक बंदी तो ऐसे हैं जो जेल से छूटने के बाद आज भी आध्यात्मिक जीवन जी रहे हैं और कर्मयोगी बन समाज में नशामुक्ति, आध्यात्मिक जागृति और मेडिटेशन का संदेश दे रहे हैं। वहीं कारागार में रोजाना 60-70 बंदी सुबह सत्संग करते हैं। ये नहा-धोकर परमात्म महावाक्य (मुरली) का श्रवण करने के बाद ही अपने अन्य कार्य करते हैं। वहीं शाम को भी 6.30 बजे से 7.30 बजे तक एक घंटा सामूहिक रूप से योग करते हैं।

आध्यात्म से आता है आंतरिक बदलाव



आध्यात्मिक ज्ञान से हमारे अंदर आत्म निरीक्षण का भाव जागृत होता है। इससे व्यक्ति अपनी कमी-कमजोरियों को सुधारता है। साथ ही मेडिटेशन से मन को शांति मिलती है। इससे क्रोध पर नियंत्रण होता है। जेल के अंदर ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा जो भी गतिविधियां संचालित की जाती हैं उससे जेल का माहौल सकारात्मक बना रहता है। इससे बंदियों का व्यवहार बदला है।

अंबरीश गौड़

जेल अधीक्षक, केंद्रीय कारागार शिवपुर, वाराणसी

जेल का माहौल हुआ शांतिपूर्ण

जेल में जब से ब्रह्माकुमारी की ओर से राजयोग प्रशिक्षण केंद्र की शुरुआत की गई है माहौल में आश्चर्यजनक बदलाव आया है। अब बंदी शांति से रहते हैं और सुबह-शाम ध्यान लगाते हैं। कई बंदियों को जीवन तो पूरी तरह से बदल गया है। इसे देखकर नए आने वाले बंदी भी प्रभावित होते हैं।

केपी सिंह

जेलर, केंद्रीय कारागार शिवपुर, वाराणसी

कई बंदियों का जीवन बन गया आदर्श



परमात्म प्रेरणानुसार वर्ष 2006 में केंद्रीय कारागार में राजयोग केंद्र की स्थापना की। मानव के अंदर छिपी हुए आध्यात्मिक मूल्यों एवं शक्तियों को जागृत कर ही देवत्व की ऊंचाई तक बढ़ने की प्रेरणा एवं बल प्रदान करने का सामर्थ्य परमात्म शक्ति, ईश्वरीय ज्ञान में निहित है। कारागार में आज बंदियों के जीवन में आए बदलाव को देखकर मन को प्रसन्नता होती है। कई बंदियों का जीवन तो प्रेरणादायी और आदर्श बन गया है जो एक मिसाल है। ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा लोगों को आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा देने के साथ सामाजिक क्षेत्र में भी बढ़चढ़कर सेवाएं की जा रही हैं। स्वच्छता अभियान से भी लोगों को जागरूक कर रहे हैं।

राजयोगिनी बीके सुरेन्द्र दीदी,

निदेशिका, पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं पश्चिम नेपाल, ब्रह्माकुमारी

बंदियों की बदल गई मनोवृत्ति...



समय और परिस्थिति के वस मनुष्य अपराध की दुनिया में चला जाता है या अपराध कर बैठता है। लेकिन बाद में उसे इसका पश्चाताप भी होता है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन से आज केंद्रीय कारागार में कई बंदियों की मनोवृत्ति पूरी तरह से बदल गई है। अब वह श्रेष्ठ नागरिक बनने के अभिनव कार्य में जुटे हैं। सही मार्गदर्शन से कोई भी सही मार्ग पर आ सकता है। राजयोग मानव की सुषुप्त शक्तियों को जागृत कर देता है।

वरिष्ठ राजयोगी बीके दीपेन्द्र भाई,

ब्रह्माकुमारी, वाराणसी

राजयोग ने हर पल की मदद...



राजयोग का ही कमाल है जो समय प्रति समय कारागार के अंदर आने वाली अनेक विपरीत परिस्थितियों और समस्याओं के समय बंदी भाइयों ने बहुत ही धैर्यता एवं साहस से काम लिया। साथ ही माहौल को शांत बनाए रखा। यह वही बंदी भाई थे जो पहले माहौल को बिगाड़ने, नकारात्मक गतिविधियों में साथ देने, व्यसन आदि का सेवन करने में लगे रहते थे। बंदियों का जीवन सुधरते देख मन को बेहद खुशी होती है।

बीके विपिन भाई, मीडिया को-ऑर्डिनेटर, वाराणसी सबजोन, ब्रह्माकुमारी



स्व प्रबंधन

बीके रुषा

स्व प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

शिव आमंत्रण माउंट आबू। काल चक्र निरंतर चलता रहता है। समय संसार की सभी घटनाओं के पूर्ण उतार-चढ़ाव का साक्षी है। इस कालचक्र की कहानी में अनेक गुहा रहस्य समाए हुए हैं। परंतु आज के मनुष्य के लिए उसे समझना बड़ा

काल चक्र का रहस्य जानना जरूरी

कठिन है। इसलिए मनुष्य कई बार वर्तमान के कई दृश्यों को उलझन में पड़ जाता है और बहुत दुःखी होकर सोचता है कि 'मेरे साथ ऐसा क्यों होता है? तीनों कालों के बारे में न जानने के कारण वह भगवान को भी नहीं छोड़ता और कहता कि भगवान मेरे साथ ही ऐसा क्यों करता है? उसके मन के उलझन भरे सभी प्रश्नों का उत्तर सिर्फ समय के पास है, लेकिन उसके लिए हमें समय की गति को समझना होगा। समय के विषय में कहा जाता है कि समय बड़ा बलवान है। समय के आगे किसी का जोर नहीं चलता। अगर हमने समय की पुकार को

नहीं सुना तो बाद में पश्चाताप के अलावा और कुछ भी प्राप्त नहीं होता। मानव जीवन में जब भी कोई परिस्थिति, समस्या या चुनौती आती है, तो वह एक संकेत देकर हम से सकारात्मक या नकारात्मक प्रत्युत्तर की मांग करती है। जब हम समय के इशारे को समझकर सही प्रत्युत्तर देते हैं तो समय हमें जीवन में आगे बढ़ा देता है। परन्तु अगर समय की मांग के विपरीत प्रत्युत्तर देते हैं तो बड़ा कठोर हो जाता है और अच्छों-अच्छों को भी पछाड़ना आरंभ कर देता है। यह अनुभव बहुत दर्दनाक होता है। तभी तो कहा गया है कि यदि आप समय

के अनुकूल परिवर्तन नहीं करते तो समय आपको परिवर्तित होने के लिए मजबूर कर देगा। व्यक्ति की परिवर्तन की इच्छा नहीं होती। परन्तु उसे समय की मजबूरी से परिवर्तन करना पड़ता है। तभी तो यदि कोई किसी को सुधारने का प्रयत्न करते और वह सुनता नहीं तो यही कहा जाता कि इसे छोड़ दो जब समय के थपड़े खाएगा तो अपने आप सुधर जाएगा। फिर भी यदि व्यक्ति अपने अहंकारवश परिवर्तन नहीं करता तो समय महाकाल का स्वरूप भी धारण कर लेता है। तभी तो कहा गया है कि यदि तुम समय को नष्ट करोगे तो समय तुम्हें नष्ट कर देगा। स्पष्ट है कि समय बड़ा बलवान है।

समय प्रबंधन बन गया मैनेजमेंट का विषय...


आज की दुनिया में मैनेजमेंट के क्षेत्र में समय प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण विषय बन गया है। लोग अपने समय का संपूर्ण सदुपयोग करना चाहते हैं। उसके लिए कई लोग सुझाव देते हैं कि सुबह जल्दी उठकर के सारे दिन की योजना बनाई जाए और जो जरूरी या आवश्यक कार्य हैं उसे पहले करें और फिर उस योजना के हिसाब से एक के बाद एक कार्य करते जाएं तो सारा दिन हम समय का पूर्ण सदुपयोग करके लाभ उठा सकते। लेकिन हरेक का यह अनुभव है कि जिस दिन व्यक्ति अपना समय नियोजन करता है तो

एक-दो कार्य तो वह उस अनुसार संपन्न कर लेता है परन्तु बाद में कोई ऐसी परिस्थिति या समस्या आ जाती है जिसमें उलझकर उसका पूरा दिन उसी उधेड़बुन में निकल जाता है। रात्रि को सोने से पहले जब व्यक्ति अपना टाइम टेबल देखता है तो वह दुःखी होकर सोचता है कि 'आज का दिन भी ऐसा चला गया।' इस तरह जीवन में एक-एक दिन ऐसे ही निकलता जाता है। तब कहा जाता है कि समय का पंछी उड़ता जाए, वो हाथ कभी ना आए। आज के युग में सभी को समय के विषय में जिज्ञासा रहती है। इसलिए जब कोई समय के विषय में भविष्यवाणी करता है तो हमेशा व्यक्ति बड़ी रुचि से सुनता है।

ॐ नेशनल पेंटिंग कॉम्पटीशन में देशभर से पहुंचे 500 से अधिक ख्यात कलाकार...

मन के भावों को रंगों से किया 'साकार'

कलाकारों ने कैनवास पर कलाकृतियों को किया जीवंत योगी, बुद्ध, श्रीकृष्णा से लेकर प्रकृति के मनोरम दृश्यों को दिया आकार ब्रह्मा बाबा, दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी की जीवंत पोर्ट्रेट बनाई

शिव आमंत्रण  आबू रोड। योग-साधना में लीन योगी, गोकुल में गाय के साथ बांसुरी बजाते श्रीकृष्ण, शांत मुद्रा में ध्यान की अवस्था में राजयोगी, प्रकृति का शांत वातावरण और उगते सूरज का अनुपम नजारा। ये दृश्य पेंटिंग कॉम्पटीशन कम वर्कशॉप में देखने को मिले। ब्रह्माकुमारी संस्थान और दिल्ली के आर्ट परिधी ग्रुप द्वारा आयोजित इस कॉम्पटीशन में देशभर से 500 से अधिक कलाकार भाग लेने पहुंचे।

कलाकारों ने अपनी रचनाओं में मन के भावों को आकार दिया तो कल्पनाओं का संसार कैनवास पर नजर आया। कलाकारों ने बहुत ही बारीकी और एकाग्रता के साथ कैनवास पर रंगों को उकेरा। जब पेंटिंग पूरी हुई तो दृश्य जीवंत हो उठा। एकजीबिशन का अवलोकन कर संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कलाकारों का उत्साह बढ़ाया। ब्रह्मा बाबा और 103 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी की जीवंत पेंटिंग देख जमकर सराहना की। परिधी आर्ट ग्रुप दिल्ली के डायरेक्टर निर्मल वैद्य ने बताया कि पहली बार देश में इतने बड़े स्तर पर पेंटिंग कॉम्पटीशन आयोजित किया गया है। इसमें 500 से अधिक कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों को बेहतर से बेहतर रंग देने के लिए



जीतोड़ मेहनत की। इसमें विद्यार्थियों ने भी ख्यात कलाकारों से बढ़कर संदेश देती पेंटिंग बनाई। बाद में वरिष्ठ कलाकारों के पैल ने इनमें से तीन पेंटिंग को सिलेक्ट कर तीन प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार वितरित किया गया। विजेताओं को सम्मेलन में प्रशस्ति पत्र देकर और शॉल पहनाकर सम्मानित किया गया। सभी पेंटिंग की एकजीबिशन शांतिवन के डायमंड हॉल में वैश्वक शिखर सम्मेलन में लगाई गई। इसका शुभारंभ सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा ने किया। विश्व के 140 देशों से पधारे 6 हजार से अधिक लोगों ने इनका अवलोकन कर कलाकारों की कल्पना की सराहना की।

मेडिटेशन के अभ्यास से पेंटिंग बनाने में मदद मिली

फाइन आर्ट में गोल्ड मेडलिस्ट, कई अंतरराष्ट्रीय फाइन वर्कशॉप में भाग ले चुकी ब्रह्माकुमारी पूजा बहन ने बताया कि मुझे बचपन से ही पेंटिंग बनाने का शौक था। इसके चलते राजस्थान यूनिवर्सिटी से फाइन आर्ट में मास्टर डिग्री पूरी की। मेडिटेशन के अभ्यास से पेंटिंग बनाने में मदद मिलती है। परमात्मा के ध्यान के साथ पेंटिंग की शुरुआत करती हूँ। इससे मेरे दिमाग में क्रियटिव विचार आते हैं। बता दें बीके पूजा की पेंटिंग की एकजीबिशन जयपुर के जवाहर कला केंद्र की आर्ट गैलरी में लग चुकी है।

मीडिया महासम्मेलन...

आठ सूत्रीय एजेंडा पारित... बेहतर विश्व के निर्माण के लिए प्रबुद्ध मीडिया

मीडियाकर्मी आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनें



भारत सहित एशिया, अफ्रीका के 14 देश से 1500 से अधिक पत्रकार हुए शामिल

शिव आमंत्रण  आबू रोड। ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन परिसर में 21 सितंबर से 25 सितंबर तक राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें सात खुले सत्र एवं टॉक शो हुए। समापन पर सर्व सहमति से आठ सूत्रीय एजेंडा प्रस्ताव पारित किया गया। 'बेहतर विश्व के निर्माण के लिए प्रबुद्ध मीडिया' विषय पर आयोजित सम्मेलन में भारत सहित विश्व के 14 देशों से पधारे पत्रकारों ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने एक स्वर में कहा सबसे पहले मीडियाकर्मीयों को आध्यात्मिक और नैतिक रूप से सशक्त बनना होगा। उन्हें खुद को मूल्यनिष्ठ बनाकर समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करना होगा, तभी दूसरों का और समाज का परिवर्तन संभव है। स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है। महासम्मेलन में करीब 1500 से अधिक पत्रकारों ने भाग लिया।

देश-विदेश के नामी पत्रकारों के विचार...

● न्यूज इंडिया चैनल के एडिटर इन चीफ संजय शर्मा ने कहा यदि मीडिया में ट्रस्टिपन लाया

जाए तो मीडिया विश्व बदलाव का बड़ा माध्यम बन सकता है। इसके लिए लोगों को आगे आकर प्रयास करना होगा। क्योंकि आज औद्योगिक घरानों के हाथों में मीडिया की कमान है। इससे निष्पक्ष पत्रकारिता कर पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। एक व्यक्ति पूरी दुनिया का परिवर्तन कर सकता है। ये बात प्रजापिता ब्रह्मा बाबा साकार कर रहे हैं।

● केंद्रीय रुल बिजनेस एंड प्लानिंग डिपार्टमेंट के डिप्टी डायरेक्टर अजय कुमार राय ने कहा आजादी से लेकर देश में जो भी बड़े या महान कार्य हुए हैं वह सभी मीडिया के कारण ही संभव हो सके हैं। देश में आर्टीआई लागू करने में मीडिया की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

● वरिष्ठ पत्रकार एवं राजी-खुशी के संपादक प्रो. कमल दीक्षित ने कहा मीडिया ही बदलाव का सबसे बड़ा केंद्रबिंदु और माध्यम है। जब पत्रकार आध्यात्मिक रूप से सशक्त, मजबूत और दिव्य गुणों से ओतप्रोत होगा तो समाज भी उसी अनुसार हो जाएगा। क्योंकि मूल्यनिष्ठ समाज का आधार मूल्यनिष्ठ मीडिया है।

● जयपुर से पधारे दूरदर्शन के डायरेक्टर डॉ.

राजकुमार नायर ने कहा कलम ईश्वर से जुड़ने का सशक्त माध्यम है। ब्रह्माकुमारी द्वारा इस पावन भू-धरा से समाज को बदलने का कार्य किया जा रहा है। यहां से वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को साकार किया जा रहा है।

- सागर से आए इंक मीडिया कॉलेज के डायरेक्टर डॉ. आशीष द्विवेदी ने कहा पत्रकारों को अपनी मानसिकता बदलने की जरूरत है। आज पत्रकारिता अपने पतन के स्वर्णिम काल की ओर जा रही है। आज अखबारों में जिस तरह से खबरों को प्रस्तुत किया जा रहा है, इससे रिश्तों से विश्वास उठता जा रहा है। संबंधों में असुरक्षा की भावना बढ़ रही है।
- रायपुर से पधारे संपादक मधुकर द्विवेदी ने कहा ब्रह्माकुमारी आठ दशक से समाज उत्थान का कार्य कर रही है। ब्रह्माकुमारी बहनें साक्षात् सरस्वती का अवतार हैं जो समाज में आध्यात्म की ज्योत जगा रही हैं।
- अहमदाबाद के पॉजिटिव मीडिया इंस्टीट्यूट के फाउंडर रमेश पी तन्ना ने कहा अखबार में पेजों की संख्या से नहीं बल्कि उसमें लिखा क्या गया है, इससे फर्क पड़ता है।
- मीडिया विंग के अध्यक्ष बीके करुणा ने कहा समाज में परिवर्तन लाने का कार्य मीडिया द्वारा ही संभव है। मीडिया ही विश्व परिवर्तन का महान कार्य कर सकता है।
- मुंबई से आए नवभारत टाइम्स के एडिटर सुंदरचंद्र ठाकुर ने कहा मीडिया को अपनी जिम्मेदारी समझते हुए समाज को बेहतर बनाने की दिशा में जरूरी कदम उठाने होंगे।
- मीडिया विंग के उपाध्यक्ष आत्म प्रकाश, मुख्यालय संयोजक बीके शांतनु, राष्ट्रीय समन्वयक बीके सुशांत, पीआरओ बीके कोमल, प्रो. डॉ. मरिनल चटर्जी प्रो. डॉ. संजीव भानावत ने भी विचार व्यक्त किए।



डायबिटीज एक मीठी बीमारी है। भारत में हर पांच में से एक व्यक्ति को मधुमेह की बीमारी है। अधिक प्यास या भूख लगना। अचानक वजन घट जाना, लगातार कमजोरी और थकावट महसूस करना। घाव भरने में ज्यादा वक्त लगना। बार-बार पेशाब होना। आंखों से हर चीजों का धुंधला नजर आना, त्वचा में संक्रमण और खुजली होना आदि मधुमेह के लक्षण हो सकते हैं।

मधुमेह हो जाने पर ये करें...

नियमित रूप से ब्लड शुगर की जांच कराते रहें। परहेज करना बहुत ही आवश्यक है। असावधानी बाद में घातक हो सकती है। बाद में अंधापन, विच्छेदन या डायलिसिस का सामना करने से कहीं आसान और अच्छा है परहेज करना। दवाओं के सेवन को हल्के में ना लें और डॉक्टर के बताए हुए समय पर दवा अवश्य लें। स्वस्थ खाएं और एक्टिव रहें। व्यायाम करके इसे काफी हद तक कंट्रोल किया जा सकता है। संभव हो तो खाना खाने के लिए अपने जैसा ही साथी चुनें। इससे अपनी जीभ को कंट्रोल करना आसान होगा। पर्याप्त मात्रा में नींद लें। सुबह या शाम को टहलने की आदत डालें।

इन चीजों को खाने-पीने में अवाइड करें...

धूम्रपान, चीनी, मिठाई, ग्लूकोज, मुरब्बा, गुड़, ऑइसक्रीम, केक, पेस्ट्री, मीठा बिस्कुट, चॉकलेट, शीतल पेय, गाढ़ा दूध, क्रीम, तला हुआ भोजन, मक्खन, घी और हाइड्रोजनीकृत वनस्पति तेल, सफेद आटा, जंक फूड, कुकीज, डिब्बा बंद संरक्षित खाद्य पदार्थ, नमक, मीठ, मछली, अंडा, अल्कोहल, चाय, कॉफी, शहद, नारियल, अन्य नट, मीठा जूस, समुद्री भोजन इत्यादि चीजों का खाने-पीने में परहेज करें।

इन्हें खाने-पीने में प्रयोग करें...

खूब पानी पीएं। अंगूर, अनार का रस, भारतीय ब्लैकबेरी, केला, सेब, अंजीर, काली बेरी, कीवी फल, खट्टे फल, ककड़ी, सलाद पत्ता, टमाटर, गाजर, पत्तियां, पालक, शलजम, गोभी और रंगीन सब्जियां, बिना शक्कर फलों का रस, कच्चा केला, कच्ची मूंगफली, खरबूजे, सूखे मटर, सेब साइडर सिरका, रिकमंड दूध पाउडर, गेहूं, दलिया, बादाम, मटर, अनाज, छोला, बंगाल चना, काला चना, दाल, मकई, सोया अंकुरित फलियां, रोटी, गेहूं की भूसी, पूरे अनाज रोटी, मट्ठा, दही, संतुलित प्रयोग करें इत्यादि।

नियमित योगासन करें...

मधुमेह की समस्या को पूर्णतः ठीक करने के लिए अपनी जीवन शैली में योगासन, प्राणायाम व ध्यान मेडिटेशन को जोड़ना सही कदम है। कपालभाति प्राणायाम, धनुरासन, पश्चिमोत्तानासन, श्वासन जैसे व्यायाम मधुमेह के लिए आवश्यक है। कपालभाति प्राणायाम आपके तंत्र-तंत्रिकाओं और मस्तिष्क की नसों को ऊर्जा प्रदान करता है। धनुरासन अग्नाशय को सक्रिय करता है। पश्चिमोत्तानासन शरीर में प्राण ऊर्जा और मन को शांति प्रदान करता है। श्वासन पूरे शरीर को विश्राम प्रदान करता है। जो व्यक्ति व्यायाम नहीं करता है उसमें इंसुलिन काम नहीं करता है। जीवन में अगर हमेशा हेल्दी रहना चाहते तो नियमित व्यायाम करना चाहिए। व्यायाम करने से हमारे शरीर से सारी गंदगी निकल जाती है। जो व्यक्ति हिलता-डुलता नहीं है तो उसका ब्लड सर्कुलेशन धीमा हो जाता है। इससे शरीर में बहुत सारी गंदगी जमा हो जाती है। रेगुलर एक्सरसाइज से मलद्वार, यूरिनल और रोम छिद्र से सारी गंदगी बाहर आ जाती है। व्यायाम करने वाले लोग हमेशा स्फूर्ति महसूस करते हैं। वजन घटाने के लिए सिर्फ भोजन कम करने से काम नहीं चलेगा। साथ में एक्सरसाइज जरूरी है। खाना खाने के बाद तुरंत व्यायाम करना ठीक नहीं है। थोड़ा सा टहलना चाहिए।

सुबह तेज आधा घंटा वॉक करें...

जिस दिन सुबह आपने आधा घंटा फास्ट वॉक शुरू कर दिया उस दिन से आप फिट हो जाएंगे। टहलना सबसे बेहतर व्यायाम है। अनुलोम-विलोम एक्सरसाइज सांसों का व्यायाम बहुत अच्छा है। साइकिलिंग इस बेस्ट एक्सरसाइज। जिनको व्यायाम करने की फुर्सत नहीं है उन्हें हॉस्पिटल जाने की फुर्सत जरूर मिलेगी। हम अपने शास्त्रों अनुसार देवी-देवताओं यानी अपने पूर्वजों के बारे ऐसा कभी नहीं सुना कि उन्हें डायबिटीज, कैंसर जैसी कोई घातक बीमारी थी। क्योंकि उनका जीवन संपूर्ण प्रकृतिजोत सुखमय आनंदमयी जीवन था। इसलिए रास-डांस करना अच्छा है। सिर्फ शारिरिक व्यायाम करने से सबकुछ ठीक नहीं रहेगा। शारीरिक व्यायाम के साथ मानसिक व्यायाम यानी अपने मन का तार आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से करना होगा, तभी हम ज्ञान गुणों से भरपूर और सदा स्वस्थ बने रहेंगे।


यहां करें संपर्क

बीके जगजीत मो. 9413464808, डॉ. सविता सोनर मो. 9461604139
पेशेंट रिलेशन ऑफिस, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोंही, राजस्थान,

कार्यशाला में 300 से अधिक कृषि वैज्ञानिक, डीन, प्रोफेसर्स, संशोधनकर्ता हुए शामिल...

चार विश्वविद्यालय करेंगे यौगिक खेती पर शोध



शिव आमंत्रण  आणंद। गुजरात में प्राचीन कृषि पद्धतियों का नए पहलुओं से आणंद कृषि विश्वविद्यालय में शुभारंभ हुआ है। आणंद कृषि विश्वविद्यालय और ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा संयुक्त रूप से यौगिक खेती, जैविक खेती तथा शून्य बजट प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें गुजरात के कई कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं अध्यक्ष शामिल हुए।

शुभारंभ आनंद कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एनसी पटेल, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एआर पाटक, कामधेनु विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पीएच वाटलिया, गुजरात कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एमएच मेहता, ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा बीके सरला, उपाध्यक्ष बीके राजू, मुख्यालय संयोजक बीके सुमंत ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान बीके भाई-बहनों ने शाश्वत जैविक-यौगिक खेती के फायदों

के बारे में बताया। कार्यशाला में 300 से अधिक कृषि वैज्ञानिक, डीन, प्रोफेसर्स, संशोधनकर्ता और प्रगतिशील किसान देशभर से शामिल हुए। बता दें कि शाश्वत यौगिक खेती पर गुजरात के आनंद कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, सरदारनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय में शोध किया जाएगा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा एमओयू भी साइन किया जाएगा।



समस्या समाधान

ब.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

भटकते मन को नियंत्रित करने की कला जानना जरूरी

मेडिटेशन से भटकते मन को कैसे कंट्रोल करें यह कला सभी को जानना जरूरी है। आजकल मन का भटकना बढ़ता जा रहा है। लोगों के पास अच्छी जाँब है, बच्चे हैं, घर-परिवार है, आर्थिक रूप से संपन्न हैं लेकिन फिर भी अपने संकल्पों से दुःखी हैं। हमें अपने संकल्पों की सृष्टि को सुंदर बनाना है। हम क्या सोचें और क्या न सोचें ये जानना जरूरी है। योग में बैठे हैं और जरा सा परचिंतन चल जाए तो सारा सुख चला जाता है। इस ईश्वरीय जीवन में आनंद की बहुत वैल्यू है। योग के बीच में कोई संकल्प आ गया तो खुशी खत्म, परमानंद खत्म, गहन शांति खत्म, मन विचलित हो जाता है। जो जितना अच्छा सोचेंगे, उनका जीवन उतना ही अच्छा होगा। सकारात्मक सोचना हमारे हाथ में है। कोई भी घटना जीवन में घट गई है। किसी प्रियजन की मृत्यु हो गई है और उसे याद करके परेशान रहना ज्ञानी की निशानी नहीं है। जो हिसाब-किताब था पूरा हो गया या उस आत्मा के साथ इतने ही दिन का साथ था। अब अपने भविष्य को मैला क्यों करें? अब तो अपने मन को उससे मुक्त रखें। जो ज्ञानी नहीं हैं वह सोचेंगे क्यों हुआ? किसलिए हुआ? किसने किया? उसको ऐसा नहीं करना चाहिए? तो हम अपनी सोच को अच्छा करेंगे। हमारा जीवन बहुत योग्युक्त हो।

परमात्मा के साथ से आती है विचारों में दृढ़ता

ड्रीम बिग एंड एचीव बिग कार्यक्रम में मोटिवेशनल स्पीकर बीके प्रहलाद के उद्गार



शिव आमंत्रण  ग्वालियर (मप्र)। प्रतीक इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी द्वारा ड्रीम बिग एंड एचीव बिग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मोटिवेशनल स्पीकर बीके प्रहलाद ने कहा पिता परमात्मा की याद और उनका साथ हमारे दृढ़ता संपन्न विचारों को शक्ति प्रदान करता है, जिससे हम अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ सकते हैं। हमें सदा अपने लक्ष्य की ओर ही ध्यान रखना है। न कि राह में आने वाली अड़चनों को देखना है। क्योंकि इतिहास गवाह है जिन्होंने भी बड़े-बड़े काम किए हैं उन्हें कभी भी अनुकूल वातावरण नहीं मिला है, बल्कि उन्होंने भी प्रतिकूल वातावरण में अपने आप को सिद्ध किया है। जितनी अच्छी हमारी सोच होगी, उतना ही हम अपने लक्ष्य को आसानी से हासिल कर सकते हैं। इंस्टीट्यूट के निदेशक मनोज चौरसिया बीके प्रहलाद का स्वागत किया।

दिलाराम से दिल को आराम

माधोगंज स्थित प्रभु उपहार भवन में वर्ल्ड हार्ट डे पर विश्व कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. गुरचरण ने कहा वर्तमान समय में हमें अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। क्योंकि थोड़ी जागरूकता से हम इस गंभीर रोग से बच सकते हैं।



लिए हमेशा अच्छी सोच के साथ काम करना होगा। आप क्या करना चाहते हैं उसकी विधिवत प्लानिंग करें। किसी भी परिस्थिति आए घबराएं नहीं, धैर्य रखते हुए सब ईश्वर पर छोड़ दें। खुश होकर कार्य करें। क्रोध नहीं करें। इस दौरान गायत्री ऑटो इंडस्ट्रीज के एडवाइजर डॉ. पीएस चौहान, प्रशिक्षण संयोजक अमित ओझा उपस्थित रहे। गायत्री ऑटो इंडस्ट्रीज के निदेशक गौरव सिंह ने आभार माना।


सभी आत्माओं के परमात्मा एक हैं



शिव आमंत्रण  संबलपुर (उड़ीसा)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर एक ईश्वर, एक विश्व परिवार विषय पर सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारे संस्थान के धार्मिक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके रामनाथ भाई ने कहा हम सभी आत्माओं के परमपिता एक परमात्मा ही हैं। सेवाकेंद्र पर मीडिया सम्मेलन भी आयोजित किया गया। बीके रामनाथ भाई ने पत्रकारों से समाचारों में आध्यात्मिकता को शामिल कर विश्व परिवर्तन में सहयोगी बनने का आह्वान किया। संबलपुर उपक्षेत्र संचालिका बीके पार्वती दीदी ने जीवन में राजयोग को शामिल करने की सलाह दी।

इंजीनियर्स डे पर किया सम्मान



शिव आमंत्रण  राजगढ़। इंजीनियर्स डे पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ पीडब्ल्यूडी के एकजीक्यूटिव इंजीनियर विकास राजौरिया, पीएचई के एकजीक्यूटिव इंजीनियर अजय बेन, असिस्टेंट इंजीनियर प्रताप सिंह सिसौदिया, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मधु ने दीप प्रज्वलित कर किया।

भगवान कहते हैं, मैं तुम्हें लेने आया हूँ...

अब घर जाना है। भगवान कहता है- मैं तुम्हें लेने आया हूँ। ममत्व छोड़ जाना है। क्या हमें याद है कि जाना है? यह अच्छी बात हमें अनेक बंधनों से मुक्त कर देगी। मन का भटकना बंद हो जाएगा। बाबा हमें स्मृति दिला रहे हैं। स्मृति आना इससे हम योग युक्त हो जाएंगे। अब खेल पूरा हुआ। अब तुम्हें देह छोड़ना ही है। 84 जन्म पूरे हो रहे हैं। अब चलना ही है अपने घर। क्या हमें याद आता है? सभी अपने से दिल की गहराइयों से पूछें? क्या हमें याद आया कि अब खेल पूरा हुआ? नाटक पूरा हुआ? वस्त्र उतारने हैं और चलना है। पूछे सभी अपनी से यह केवल कहने की बात नहीं है। याद आ जाए अनेक बार हमने यह चक्र लगाया है। खेल खेला है। अनेक बार हम घर गए हैं, याद आने लगे। ऐसे चिंतन की बहुत जरूरत है। चिंतन से अपनी बुद्धि को एकाग्र करेंगे। जिससे बुद्धि में इधर-उधर की बातें भर ली हैं, उसकी बुद्धि स्थिर नहीं हो पाती है। पहली बात है अपने संकल्पों को चेक करेंगे। आज सभी को अपनी समस्या की तपस्या करनी है। यह किसी और के कहने से नहीं होगा, सिर्फ आत्मचिंतन से होगा।

माया कर रही है प्रबल रूप से काम...

आज हम भूल चुके हैं कि इस समय माया प्रबल रूप से काम कर रही है। बाबा कहते थे विनाश काल में प्रकृति के पांचों तत्व और माया के पांचों विकार फुल फोर्स से आक्रमण करेंगे। माया के विकार फुल फोर्स से आक्रमण कर रहे हैं। पिछले तीन साल में लाखों बाबा के बच्चे विदाई ले चुके हैं। माया के वशीभूत होकर 40 साल ज्ञान में चल कर भी हाथ और बाबा का साथ छोड़ दिया है। गृहस्थी हिसाब-किताब उभर आया। आप सब जो यहां बैठे हो यह आपके साथ ना होंगे। भगवान आया है ये निश्चय है पूरा? यही मार्ग सत्य है जन्म-जन्म का भाग्य बन रहा है। ये बातें करें स्वयं से।

तपस्या अच्छी होगी तो समस्याएं नहीं रहेंगी...

काम-वासनाओं को तब तक जीता नहीं जा सकता जब तक रोजाना चार घंटे योग ना हो। इस ज्ञान मार्ग से जा वही रहे हैं जिन्होंने सेवाएं तो बहुत की परंतु कभी अमृतवले का सुख नहीं लिया। सवरे भगवान भाग्य बांटता है, पता ही नहीं है। 6 बजे ही सोकर उठे क्योंकि सेवा में 12 बज जाते थे। प्लानिंग से काम करेंगे तो कम समय में हो जाएगा। योगी बनने का मन में कितना रस है। उसका महत्व कितना पता है? योग के महत्व का तो पता ही नहीं है। योग का सुख जिसे मिल गया हो वह तो योग करेंगे ही। काम छोड़ें और योग करेंगे। तपस्या अच्छी होगी तो समस्याएं नहीं रहेंगी। सदा याद रखें बाबा मेरे साथ रहता है। उसकी शक्तियां मेरे साथ रहती हैं। हम अकेले नहीं हैं। यह अनुभूति होती रहेगी। अगर योग नहीं तो महसूस होगा कि मैं अकेला हूँ क्या करूँ? समस्याएं बहुत आ गई इन्हें कैसे खत्म करें?

सारा खेल संकल्पों का है...

एक व्यक्ति को थोड़ा बुखार है, उसने सोच लिया है, आज तो बुखार है इसलिए मुरली में कैसे जाएंगे तो सो जाते हैं। दूसरा व्यक्ति सोचता है मुरली में जाने से बुखार ठीक होगा, चलो मुरली सुनने चलते हैं। मुरली में जाता है, पसीना आता है। बुखार उतरकर घर आता है। एक व्यक्ति सोचता है समस्याएं बहुत हैं। बाबा मैं सवरे नहीं उठ सकता, दूसरा सोचता है सवरे उठेंगे बाबा की दुआएं मिलेंगी और सारी समस्याएं यूँ ही भाग जाएंगी। सारा खेल संकल्पों का ही है। संकल्प ही मनुष्य को ताकतवर बना देते हैं और संकल्प ही कमजोर बना कर बैड पर सुला देते हैं। अपने संकल्पों को स्ट्रॉंग करें और पूछें क्या मैं तपस्या करना चाहता हूँ? टाइम नहीं यह कोई नहीं मानेगा। बाबा नहीं सुनेगा क्योंकि टाइम बहुत था। अब ये हम पर निर्भर करता है कि हम अपने जीवन को कैसा बनाना चाहते हैं। ये वक्त दोबारा नहीं मिलेगा।

...शेष अगले अंक में

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य **₹ 110** रुपए
तीन वर्ष **₹ 330**
आजीवन **₹ 2500** रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक **ब.कु. कोमल**
ब्रह्माकुमारीज शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरौही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
☎ 9414172596, 9413384884
Email  shivamantran@bkiv.org
 amantran.punjab@gmail.com



for peaceful life



CABLE Network



Digital Cable



hathway



DEN



DeCable



GTPL



FASTWAY



CUCN



TATA Sky



1065



airtel digital TV



videocon



497



dishtv



Contact



Brahma Kumaris, Shantivan,
Talhetti, Abu Road (Raj.) - 307510



+91 8104777111
+91 9414151111




info@pmtv.in
www.pmtv.in

'विश्व शांति सरोवर' समाजसेवा में समर्पित



ऊर्जा मंत्री ने 25 साल तक निःशुल्क बिजली का सहयोग देने की घोषणा की


शिव आमंत्रण  नागपुर। संतरों की नगरी नागपुर में रिट्रीट सेंटर विश्व शांति सरोवर को समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया। जामठा में बने इस रिट्रीट सेंटर का उद्घाटन ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका 103 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी, ऊर्जा एवं पालक मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले, ऊर्जा, पर्यटन, खाद्य, औषधि राज्यमंत्री मदन येरावार, सांसद विकास

महात्मे, विधायक डॉ. मिलिंद माने, महापौर नंदा जिचकार, महाराष्ट्र आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना जोन की निदेशिका बीके संतोष, माउंट आबू से पधारी वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके उषा, शांतिवन के मुख्य अभियंता बीके भरत, शांति सरोवर हैदराबाद की निदेशिका बीके कुलदीप, नागपुर सबजोन की संचालिका बीके रजनी सहित संस्थान के कई वरिष्ठ पदाधिकारियों, विधायक, सांसद और प्रतिष्ठित नागरिकों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस दौरान ऊर्जा मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने खुशी जाहिर की और विश्व शांति सरोवर में के लिए 25 वर्ष तक निःशुल्क बिजली

का सहयोग देने की बात कही। इसके बाद स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया। इसमें केंद्रीय परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, सांसद व लोकमत समूह के चेयरमैन विजय दर्डा, स्थायी समिति के सदस्य कुकरेजा ने दादी जानकी से मुलाकात कर आशीर्वाद लिया। केंद्रीय मंत्री गडकरी ने कहा यह ज्ञान मानव के अंदर आध्यात्मिकता और श्रेष्ठ संस्कार बनाने में कारगर सिद्ध होगा। यह सौभाग्य है कि नागपुर की धरती पर इस रिट्रीट का निर्माण हुआ है। उन्होंने गंगा नदी के सफाई अभियान की सफलता के लिए दादी से आशीर्वाद भी लिया।

सेवाकेंद्र की मनाई रजत जयंती




शिव आमंत्रण  अंबिकापुर (छग)। सेवाकेंद्र का रजत जयंती महोत्सव पीजी कॉलेज सभागार में धूमधाम से मनाया गया। इसका शुभारंभ भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश महामंत्री भारत सिंह सिसौदिया, इंदौर जोन की निदेशिका बीके कमला, अंबावाड़ी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शारदा, उज्जैन से पधारी ऋषिनिगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके उषा, माउंट आबू से आए बीके रुपेश, अंबिकापुर सेवाकेंद्र की संचालिका बीके विद्या ने दीप प्रज्वलित कर किया। कलाकारों ने लोकनृत्य द्वारा सभी का स्वागत और अभिवादन किया। बता दें कि अंबिकापुर में वर्ष 1989 में ईश्वरीय सेवाओं का शुभारंभ किया गया था। आज यहां से सरगुजा संभाग के चार जिलों में 14 सेवाकेंद्रों एवं 70 गीता पाठशालाओं द्वारा आध्यात्मिक शिक्षा दी जा रही है।

जीवन के कड़वे अनुभवों को छोड़ दें



शिव आमंत्रण  रायपुर (छग)। ब्रह्माकुमारीज के जोनल सेवाकेंद्र शांति शक्ति सरोवर द्वारा नगर के इंडोर स्टेडियम में 'वाह जिंदगी वाह' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी ने कहा कोई भी कर्म करते हुए खुश रहें। अपने संस्कारों को दिव्य बनाएं। परिवार को मंदिर बनाना है तो एक-दूसरे में अविद्या देखने की बजाय सद्गुण देखें। बच्चों का उत्साह बढ़ाएं। जीवन के कड़वे अनुभवों को आज ही छोड़ दें। अपने अंदर के रावण को जलाकर मन में देवीगुणों को धारण करने का दीप जलाएं। परमात्मा की शक्ति से इस दुनिया में फिर से सतयुग लाना है। इसमें हम सभी को सहयोग करना है। फिल्म अभिनेता सुरेश ओबेराय ने अपने जीवन का अनुभव बताया कि कैसे सिस्टर शिवानी की स्पीच सुनकर उनका जीवन बदला। मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने संस्थान के कार्यों की सराहना करते हुए जीवन में आध्यात्मिकता को महत्वपूर्ण बताया। विधानसा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल, लोक निर्माण मंत्री राजेश मूपत, महापौर प्रमोद दुबे, क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी, इंदौर क्षेत्र की क्षेत्रीय समन्वयक ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने भी संबोधित किया। संचालन छत्तीसगढ़ योग आयोग की सदस्य ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने किया।

विश्व को जीवन जीने का तरीका सिखा रही है ब्रह्माकुमारीज: केन्द्रीय राज्यमंत्री कृष्णा राज

शिव आमंत्रण  गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज ने विश्व को जीवन जीने का तरीका सिखाया है। सुख-शांति को सहजता से पाने का रास्ता दिखाकर संस्था एक सराहनीय कार्य कर रही है। हर बार संस्था के परिसर में एक असीम शांति का एहसास होता है। उक्त उद्गार कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की केन्द्रीय राज्य मंत्री कृष्णा राज ने कही। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज के भोड़ाकला स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर के नवनिर्मित 'खुशनसीब भवन' के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। उन्होंने कहा राजयोगिनी दादी जानकी ने कर्मयोगी जीवन को साकार करके दिखाया है। विश्वभर को कर्म करते हुए योगी जीवन जीने का सहज संदेश दिया है।

गुरुग्राम: दादी जानकी ने किया खुशनसीब भवन का उद्घाटन



मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने सभी को जीवन में सुख-शांति लाने के लिए आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा धैर्यता लाने से ही जीवन में प्रेम, आनंद, सुख, शांति के गुण सहज अनुभव होंगे। उन्होंने सभी को जीवन में सामंजस्य बिठाकर चलने का आह्वान किया। कथनी-करनी समान बनाकर सच्चाई व सफाई से कार्य व्यवहार करना ही सफलता पाने का मूलमंत्र है। महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज ने कहा यहां आकर स्वर्ग की अनुभूति करते हुए कई बार स्वर्ग की परिकल्पना को साकार होते देखा है। पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी की पत्नी सलमा अंसारी ने अविस्मरणीय पलों की यादें सांझा की। संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन और ओआरसी गुरुग्राम की निदेशिका बीके आशा ने भी संबोधित किया।


सायन सेंटर के नए फ्लैट का उद्घाटन

शिव आमंत्रण  मुंबई। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के सायन सेंटर के एडिशनल न्यू फ्लैट का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र जोन की निदेशिका बीके संतोष, बोरीवली सबजोन प्रभारी बीके दिव्यप्रभा, घाटकोपर सबजोन प्रभारी बीके नलिनी, गॉडलीवुड स्टूडियो के कार्यकारी निदेशक बीके हरीलाल ने रिबन काटकर और दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज के साकार संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा और मातेश्वरी जगदंबा ने जो आध्यात्म का बीज डाला वो आज विशाल वृक्ष बनकर लाखों लोगों को परमात्म छत्रछाया की अनुभूति करा रहा है। प्रारंभ में खोले गए सेवाकेंद्रों में से एक सायन सेंटर जिसका शुभारंभ 1962 में हुआ और राजयोगिनी दादी ब्रजेन्द्रा जी इसकी इंचार्ज रहीं। अब इस सेवाकेंद्र धीरे-धीरे लोगों के लिए आध्यात्म का गुरुकुल बनता जा रहा है।



राष्ट्रीय न्यायविद् सम्मेलन आयोजित



शिव आमंत्रण  इलाहाबाद, उप्र। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के 20 विंग में से एक जुरिस्ट विंग की ओर से होटल इलावर्ट में राष्ट्रीय न्यायविद् सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें न्यायमूर्ति रामसूरत राम, न्यायमूर्ति सुधीर नारायण अग्रवाल, न्यायमूर्ति विवेक सिंह सहित वकीलों ने भाग लिया। सम्मेलन में वक्ताओं ने सभी से जीवन में आध्यात्म को शामिल करने का आह्वान किया।

पाठकों के मिल रहे अच्छे प्रतिसाद के चलते इस बार से शिव आमंत्रण की पेज संख्या 12 से बढ़ाकर 16 की गई है। इसके चलते मूल्य में आंशिक रूप से मात्र 10 रुपए वार्षिक की बढ़ोतरी की गई है। सहयोग के लिए धन्यवाद

३३ नडियाद में राज्यस्तरीय सकारात्मक पत्रकारिता लेखन प्रशिक्षण आयोजित...

मीडिया में मूल्यों की रक्षा करना हम सभी का दायित्व



इन्होंने भी व्यक्त किए विचार...


सबजोन की निदेशिका व नडियाद प्रभु शरणम् सेवाकेंद्र की संचालिका बीके पूर्णिमा बहन ने इस कार्यशाला को बहुत ही महत्वपूर्ण बताया। मीडिया प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके शांतनु, पीआरओ बीके कोमल, अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ के जर्नलिज्म एवं मास कम्युनिकेशन विभाग के प्रो. डॉ. विनोद पांडे, आचार्य सुरजबा महिला कॉलेज के हर्षित मेहता, डीएनएन आध्यात्मिक चैनल के कल्पेश तलाटी, जलगांव के उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के डॉ. सोमनाथ बड़नेरे, साहित्यकार चंपक मोदी, मीडिया प्रभाग की समन्वयक बीके रंजन बहन, सह समन्वयक बीके नंदिनी बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इसमें पूरे गुजरात से पधारे करीब 140 से अधिक भाई-बहनों ने प्रशिक्षण लिया। वहीं नवपत्रकारों के लिए डॉ. सोमनाथ द्वारा लिखित पुस्तक 'पत्रकारिता तथा मीडिया सेवा के बदलते आयाम' का विमोचन भी किया गया।

राज्यस्तरीय प्रशिक्षण कार्यशाला का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते अतिथि व वक्तागण।

शिव आमंत्रण  नडियाद (गुजरात)। मूल्यों का क्षरण हर क्षेत्र में हो रहा है। पत्रकारिता भी इसमें शामिल है। मीडिया में कई नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। मीडिया तेजी से मिशन से प्रोफेशन की तरफ अग्रसर है। इस स्पर्धा तथा बदलते आयाम में पत्रकारिता के मूल उद्देश्य और मूल्यों की रक्षा करने का उत्तर दायित्व हम सभी का है। मीडिया के इस नये आयामों में शाश्वत मूल्यों की रक्षा करना हमारा उद्देश्य रहे। उक्त विचार वरिष्ठ पत्रकार व राजी-खुशी मैगजीन

के संपादक प्रो. कमल दीक्षित ने व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज के नवनिर्मित 'प्रभु शरणम्' सबजोन सेवाकेंद्र पर मीडिया प्रभाग की ओर से तीन दिवसीय राज्यस्तरीय आध्यात्मिक पत्रकारिता कौशल विकास प्रशिक्षण हुआ। उन्होंने कहा पूर्वलोक हितकारी पत्रकारिता के उद्देश्यों को बनाए रखने में विश्व में जो प्रयास हो रहे हैं, उसमें ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग द्वारा आध्यात्मिक पत्रकारिता लेखन प्रशिक्षण एक अनोखा और अनुकरणीय प्रयास है।


राष्ट्रपति ने कहा- ब्रह्माकुमारीज संस्था महिलाओं को सशक्त बनाने में जुटी

शिव आमंत्रण  दिल्ली। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से गत दिनों ब्रह्माकुमारीज के गुरुग्राम स्थित ओआरसी के निदेशिका बीके आशा बहन और संस्थान के संयुक्त महासचिव बीके बृजमोहन से मुलाकात की। इस दौरान राष्ट्रपति ने महिलाओं के सशक्तिकरण में ब्रह्माकुमारीज की भूमिका की सराहना करते हुए कहा संस्था सबसे महत्वपूर्ण महिलाओं को सशक्त बनाने में लगी हुई है।




पीस मैसेंजर बस पहुंची ब्रह्मपुर



शिव आमंत्रण  ब्रह्मपुर (उड़ीसा)। युवाओं में सकारात्मकता, स्वच्छता और आध्यात्मिकता की आलख जगाने ब्रह्माकुमारीज के युवा प्रभाग द्वारा निकाली जा रही मेरा भारत, स्वर्णिम भारत यात्रा के ब्रह्मपुर पहुंचने पर जोरदार स्वागत किया गया। इस दौरान पीस मैसेंजर बस का विधायक डॉ. आरसी पटनाइक, डेवलपमेंट अथॉरिटी के अध्यक्ष सुभाष महराना ने स्वागत किया। बता दें कि इस तीन वर्षीय मेरा भारत, स्वर्णिम भारत कैम्पेन के माध्यम से पूरे देश में पीस मैसेंजर बस पहुंचेगी। ये कैम्पेन का दूसरा साल है, इससे जुड़कर अब तक हजारों युवाओं ने व्यसनमुक्त जीवन का संकल्प लिया है।


केशवपुरम में किया पौधारोपण



शिव आमंत्रण  मजलिस पार्क (दिल्ली)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की ओर से इब्राहिमपुर केशवपुरम में पौधारोपण किया गया। इस दौरान ग्राम विकास समिति की चेयरपर्सन तथा निगम पार्षद निर्मला राणा, बीके राजकुमारी, बीके शारदा, बीके सुष्मिता ने पौधारोपण कर संदेश दिया।


सिस्टर शिवानी ने 'जियो टॉक शो' में बताए संतुलित जीवन के सूत्र



शिव आमंत्रण  वाशी नवी मुंबई (महाराष्ट्र)। रिलायंस जियो कंपनी में जियो टॉक शो का आयोजन किया गया। इसमें बीके शिवानी ने दैनिक व्यस्त जीवन में संतुलित लाइफ स्टाइल बनाने के लिए सूत्र बताए। इसमें 1100 से अधिक अधिकारी-कर्मचारियों ने भाग लिया। इस मौके पर बीके करुणा, वाशी नवी मुंबई की केंद्र प्रभारी बीके शीला, रिलायंस इंडस्ट्रीज के मेडिकल हेड आर राजेश, वित्तीय अधिकारी रजनीश जैन, जियो मीडिया परियोजना बाला अय्यर, सुरक्षा प्रमुख केशव दुबे, व्यापार नीति अरविंद तिवारी मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

एशियन गेम्स के लिए दी माइंड पावर की ट्रेनिंग



शिव आमंत्रण  गांधीनगर (गुजरात)। जकार्ता में होने वाली एशियन गेम्स में भारत से इंडियन पैरा एथलीट्स में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के लिए गांधीनगर सेवाकेंद्र पर ब्रह्माकुमारीज एवं स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा कैम्प आयोजित किया गया। इसमें स्पोर्ट्स विंग के मुख्यालय संयोजक बीके जगवीर ने खिलाड़ियों को माइंड पावर की ट्रेनिंग दी। उन्हें गेम्स के लिए अपने मन को विजुअलाइजेशन टेक्निक द्वारा तैयार करने की बारीकियां सिखाईं। राजयोग शिक्षिका बीके कृपल, बीके ज्योति ने राजयोग मेडिटेशन की जानकारी देते हुए अभ्यास कराया।

नई राहें 'जैसा लक्ष्य, वैसे लक्षण'



बीके एषोन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

'उठो जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए'

- स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद द्वारा उच्चारित इन चंद शब्दों में जीवन का सार समाया हुआ है। यदि इन शब्दों को अंतर्मन की गहराई में उतार लिया जाए तो जीवन में किसी भी महान लक्ष्य को पाया जा सकता है। जरूरत है तो इसे आत्मसात कर एक लक्ष्य के साथ आत्म विश्वास, निरंतर पुरुषार्थ, कठोर परिश्रम और दृढ़ इच्छा शक्ति की। जरूरी नहीं है कि जिन्हें महान व्यक्ति बनना है, जीवन में महान कार्य करना है, आईएस-आईपीएस, लेखक, डॉक्टर बनना है वही लक्ष्य बनाएं। आपका लक्ष्य दिनचर्या से जुड़ी छोटी-छोटी बातें हो सकती हैं। छोटी-छोटी उपलब्धियां हो सकती हैं। सुबह जल्दी उठना और रात को जल्दी सोना लक्ष्य हो सकता है। ये मायने नहीं रखता है कि आपने लक्ष्य कितना बड़ा बनाया, मायने ये रखता है कि आपने उसे पाने के लिए क्या पुरुषार्थ किया है? उसे मंजिल तक पहुंचाने के लिए किस आत्म विश्वास के साथ कदम बढ़ाए हैं? उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आखिरी उम्मीद तक लगे रहे या बीच में ही छोड़ दिया? दुनिया में आज जो सफलता के शिखर पर हैं उन्होंने एक दिन में उस बुलंदी को नहीं छुआ है। उसके पीछे उनके उस एक-एक क्षण का योगदान है जिसे पाने के लिए उन्होंने पूर्ण समर्पण भाव के साथ श्रम की बूंदों से सींचा है।

एक कहानी के माध्यम से हम 'लक्ष्य और लक्षण' को स्पष्ट करेंगे। एक बार एक युवा को मन में तीव्र वैराग्य उत्पन्न होता है। वह घरबार छोड़कर एक गुरुकुल में दीक्षा लेता है। शुरुआत में बहुत योग-साधना करता है। दिन-रात आत्मचिंतन-परमात्म चिंतन के अलावा उसे संसार के सारे सुख-वैभव मृगतृष्णा के समान लगते हैं। यहां तक उसे कपड़ों तक की सुध-बुध नहीं रहती है। धीरे-धीरे समय गुजरता है और उस गुरुकुल में रह रहे अन्य साधकों को देखकर उसके मन में भी इच्छाएं जागृत हो उठती हैं। धीरे-धीरे उसकी साधना कम होने लगती है। भौतिक सुख-वैभव में वह इतना खो जाता है कि वह उसे ही असली आनंद मान बैठता है। वह जिस पवित्र संकल्प और ब्रह्मचर्य के व्रत के साथ गुरुकुल में प्रवेश करता है उसे भी खंडित कर देता है। एक दिन गुरुजी उसकी परीक्षा लेते हैं और वह सभी परीक्षाओं में फेल हो जाता है। तब फिर से उसकी चेतना जागृत होती है। वह चिंतन करता है कि मैं किस उद्देश्य और भाव लेकर यहां आया था और किसमें लग गया? मैंने सारा जीवन बिना तप और साधना के गुजार दिया। प्रभु चिंतन को छोड़ परचिंतन में लगा रहा। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। मृत्यु की शैया उसके नजदीक होती है। अब न साधना के लिए शरीर में शक्ति, ऊर्जा होती है, न वक्त होता है। फिर सिवाए पश्चाताप, पीड़ा, दुःख और दर्द के उसके हाथ कुछ नहीं लगता।

यहां ये बात महत्वपूर्ण है कि उस व्यक्ति की ये स्थिति इसलिए बनी क्योंकि वह अपने जीवन उद्देश्य से भटक गया था? उसने साधना की जगह साधन का मार्ग चुना? आत्म चिंतन की जगह परचिंतन का मार्ग चुना? यदि जीवन यात्रा में हम भी जिस उद्देश्य को लेकर चल रहे हैं क्या वह सदा हमें याद रहता है? क्या हमारे लक्षण भी वैसे हैं जिनसे हम वह लक्ष्य पा सकते हैं? क्या उस महान लक्ष्य को पाने के लिए हमने प्रयास रूपी कदम भी बढ़ाए हैं? क्या सिर्फ मन के मंदिर में ही उसका पूजन कर रहे हैं? क्या हमारे विचारों की प्रक्रिया उस लक्ष्य के प्रति निरंतर गतिशील, प्रवाहमान और विचारशील है? हमारी हालत उस भटके राही की तरह तो नहीं है कि जो रास्ता मिला उसी ओर चल दिए? जीवन के हर मोड़ पर इन प्रश्नों को अपने आप से करना जरूरी है। ताकि वक्त का पहिया गुजरने पर दुःख, पश्चाताप का अंधकार हमें स्पर्श न कर सके।


बात चाहे सेहत बनाने, कोई अच्छा गुण धारण करने, कुछ नया सीखने, अध्ययन या खेल की। जब तक जीवन में निरंतरता नहीं होगी हम लक्ष्य को भेद नहीं सकते हैं। उसे हासिल करने में परेशानियां, समस्याएं आंशिकी क्योंकि इनसे ही हमें आभास होता है कि हम सही दिशा में चल रहे हैं या नहीं। हमारे प्रयास कितने कारगर और सार्थक हैं। इन्हें ही हमें अपनी वास्तविकता का ज्ञान होता है। लेकिन हम इन्हें ही यथार्थ मानकर उलझ जाते हैं। कुछ दिन के प्रयास के बाद पीछे हट जाते हैं। हम सभी विशेष मौके पर बड़े-बड़े लक्ष्य बनाते हैं उन पर अमल भी करते हैं लेकिन दो-चार दिन के बाद स्थिति वही हो जाती है। क्योंकि हमने उस पर पर्याप्त चिंतन नहीं किया। उससे संबंधित विचारों को अपने मन मंदिर में जगह नहीं दी। उस पर दो-चार दिन के बाद सपने देखने बंद कर दिए और फिर वही पुरानी दिनचर्या। वैज्ञानिक शोधों में एक बात सामने आई है कि जब हम कोई विचार अपने मन को बार-बार देते हैं तो वह उसे स्वीकार कर लेता है। वह विचार हमारे अंतर्मन या अचेतन मन (सब-कॉन्सियस माइंड) में चला जाता है। जितने भी आविष्कार हुए हैं वह सभी अंतर्मन की शक्ति से ही हुए हैं। अतः जरूरत है तो मन के धरातल पर काम करने की। उसकी शक्तियों को पहचानकर सही दिशा में लगाने की। महात्मा गांधी ने कहा है हमेशा अपने विचारों, शब्दों और कर्म के पूर्ण सामंजस्य का लक्ष्य रखें। हमेशा अपने विचारों को शुद्ध करने का लक्ष्य रखें और सबकुछ ठीक हो जाएगा। लक्ष्य बनाने के साथ उसे अपने अंतर्मन के आकाश में चित्रण करना होगा फिर देखिए वह चित्रण एक दिन जीवंत हो उठेगा।

लेखक शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक हैं

सार समाचार


विश्व शांति के लिए जीवन में शांति होना जरूरी



शिव आमंत्रण  सेंट पीटर्सबर्ग (रूस)। विश्व शांति दिवस पर सेंट पीटर्सबर्ग वूमन ऑर्गनाइजेशन द्वारा पीटर और पॉल किले में समारोह आयोजित किया गया। शुभारंभ शांति के प्रतीक सैकड़ों कबूतरों को नील गगन में उड़ा कर किया गया। इसमें अतिथि के रूप में कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, नेशनल पीस फाउंडेशन की अध्यक्ष सारा हार्डर, गेस्ट स्पीकर रशिया फेडरल एसेंबली की अध्यक्ष वैलेंटाइना माटवेन्को थीं। ब्रह्माकुमारीज सेंट पीटर्सबर्ग की डायरेक्टर बिके संतोष ने सेंट पीटर्सबर्ग वूमन अलायंस सदस्य के रूप में उपस्थित रहीं। ब्रह्माकुमारीज से जुड़े सदस्यों द्वारा नृत्य प्रस्तुति दी। बिके संतोष से रूसी मीडिया बात करते हुए कहा कि विश्व में शांति की स्थापना के लिए अपने वास्तविक गुण शांति और पवित्रता जीवन में एप्लाइ करने की बात कही।

ध्यान से मिलती है संकट के समय मदद



शिव आमंत्रण  यूएसए (अमेरिका)। विश्व व्यापार केंद्र-4 में टर्निंग इसिस इन ऑपचियंस एंड स्ट्रेस इन इनर स्ट्रेथ विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सात बिलियन एक्ट ऑफ गुडनेस के निदेशक बिके राम प्रकाश ने सभी को सक्सेस के मंत्र बताया। बिके रामप्रकाश को विशेषतौर पर विश्व व्यापार केंद्र के निदेशक श्रीहृक मैककन ने आमंत्रित किया था। उन्होंने कहा हम कभी भी संकट का प्रबंधन नहीं कर सकते क्योंकि अगर हम इसे प्रबंधित कर सकते हैं तो इसे संकट नहीं कहा जाएगा। एक संकट ऐसा कुछ है जो प्रबंधन से ऊपर और परे है और इसे संभालना हमारी क्षमता से परे है। ध्यान के अभ्यास से हमें संकट के समय कैसे मदद मिलती है ये मैंने अपनी लाइफ में अनुभव किया है। उन्होंने अपना अनुभव बताया कि कैसे 9/11 की त्रासदी मेरे जीवन में लोगों की सेवा करने का अवसर बन गई। इस दौरान उन्होंने 7 बिलियन एक्ट पर प्रस्तुति दी। मैनहट्टन सेंटर की समन्वयक बहन बिके रोना ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

व्यवहार से होती है हमारी पहचान: बिके भगवान




शिव आमंत्रण  काठमांडू। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र द्वारा नैतिक शिक्षा का महत्व विषय पर मंथली माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारे वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बिके भगवान ने कहा वर्तमान समय मूल्यों के हनन से ही समाज का पतन हुआ है। हर मनुष्य को जीवन में मूल्यों की रक्षा करनी चाहिए। मूल्यों की रक्षा करने वाला अमर बन जाता है। समाज में दो चीजों से हर व्यक्ति पहचाना जाता है। पहला है ज्ञान और दूसरा उसका नैतिक व्यवहार। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए यह दोनों ही अति आवश्यक हैं। अगर ज्ञान सफलता की चाबी है तो नैतिकता सफलता की सीढ़ी। नैतिकता के कारण ही विश्वास में दृढ़ता और समझ में प्रखरता आती है। नैतिक शिक्षा गुणों का विकास करती है। बच्चों को संस्कारों से जोड़ती है। उन्हें उनके कर्तव्यों का ज्ञान कराती है। सेवाकेंद्र प्रभारी बिके सीता ने युवाओं को फैशन से दूर रहने का आह्वान किया। प्राचार्य टंक प्रसाद दहाल तथा समिति अध्यक्ष जगदीश प्रसाद ने आभार माना। केडबीएस स्कूल और तामाकोशी इंग्लिश स्कूल में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया। नेपाल में एफएम रेडियो द्वारा बिके भगवान ने लोगों को सकारात्मक विचारों के माध्यम से तनावमुक्त रहने की प्रेरणा दी।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018

Posted at Shivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month



सीखने की इच्छा से होंगे हिंदी शिक्षक तैयार

शिव आमंत्रण  देनपसार (इंडोनेशिया)। बाली की राजधानी देनपसार भारतीय वाणिज्य दूतावास में हिंदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज बहनों ने भी हिस्सा लिया। इस मौके पर हिंदी भाषा, गाने और नृत्य सीखने के महत्व पर जोर दिया गया। इंडोनेशिया में ब्रह्माकुमारीज की नेशनल को-ऑर्डिनेटर बिके जानकी ने कहा कि जब अधिक लोग हिंदी सीखने की इच्छा जाहिर करेंगे तभी ज्यादा से ज्यादा हिंदी शिक्षक आगे आएंगे। भारत के काउंसिल जनरल आरओ सुनील ने भी हिंदी भाषा के बढ़ते महत्व पर चर्चा की। स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक मनोहर पुरी सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बिके उषा ने बताया गणेश चतुर्थी का आध्यात्मिक रहस्य...

अहंकार को जीतकर विनम्र बनना ही अष्टविनायक

शिव आमंत्रण  लॉस एंजेलिस/कैलीफोर्निया (अमेरिका)। सनातन धर्म मंदिर में गणेश चतुर्थी पर सत्संग का आयोजन किया गया। इसमें माउंट आबू से पहुंची वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बिके उषा ने अष्टविनायक का आध्यात्मिक अर्थ बताते हुए कहा अहंकार को जीतकर विनम्र बनना ही अष्टविनायक है। गणेशजी के कान सूप जैसे बड़े दिखाने का मतलब कोई भी चीज वह छानबीन करके लेता है और खराब चीज लेता ही नहीं। उन्होंनेमाता-पिता से अपने बच्चों को भी इसका अर्थ बताने को कहा ताकि भविष्य में उन्हें पता हो या दूसरों को समझा सकें कि गणेशजी को ऐसे क्यों दिखाया जाता है। सेवाकेंद्र संचालिका बिके गीता ने भी विचार व्यक्त किए। महादेव भट्ट ने




स्वागत करते हुए कहा अब्दुल कलाम की 'अग्नि समापन पर मंदिर प्रांगण में ब्रह्माभोजन का पंख' किताब में बिके उषा के नाम का उल्लेख है। आयोजन किया गया।

एक दिवसीय संगोष्ठी

यूरोप तथा मिडिल ईस्ट देशों में ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका बिके जयंती ने कहा-

'राजयोग' से बदलती है जीवन की दशा और दिशा



शिव आमंत्रण  लंदन। ब्रह्माकुमारीज के ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस में 'शाइनिंग लाइट ऑन डेथ' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. पीटर फेनविक ने स्वीकार्यता की भावनाओं को विकसित करने की इच्छा के साथ सदैव जिज्ञासा का दृष्टिकोण रखने के महत्व पर बल दिया। यूरोप तथा मिडिल ईस्ट देशों में ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका बिके जयंती ने चेतना के वास्तविक अर्थ से सभी को रूबरू

कराया। ससेक्स से मिडवाइफ एनए ओमन्स ने मौलिक ऊर्जा के माध्यम से मरने वाले व्यक्ति के मिक वापसी के बारे में जानकारी दी। बाद में बिके जयंती ने सभी को राजयोग के माध्यम से गहन शांति की अनुभूति कराई। उन्होंने राजयोग मेडिटेशन के फायदे बताते हुए इसे एक चमत्कारिक विधि बताया। राजयोग जीवन की दिशा और दशा बदल देता है। डॉ. रचना चावला, सुजा चंद्रन, जानकी फाउंडेशन के चेयरमैन डॉ. सराह इगर उपस्थित रहे।